टूटल पाँखि

खलील ज़िब्रान

अनुवादक : **कीर्तिनाथ झा**

प्रकाशक

कीर्तिनाथ झा
महात्मा गांधी मेडिकल कालेज एवं रिसर्च इन्स्टिच्यूट
पांडिचेरी- 607402
Email : kirtinath.jha@gmail.com
Phone : 0413-2615568

प्रथम संस्करण - **2016**

मूल्य- **एक सय टाका**

मुद्रक- प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

TUTAL PĀNKHI (Maithili Translation of **Khalil Gibran**'s novel **'The Broken Wings'**.)
Translation by **Kirti Nath Jha**
Rs. 100/-

आदरणीय प्रोफेसर डा. शंकर कुमार झाक पुण्य स्मृतिमे

खलील जिब्रान आ 'टूटल पाँखि'

खलील जिब्रान अरबी साहित्यक महान् विभूतिक रूपमे सुपरिचित छथि । हिनक साहित्य आ कलाकृति विश्वप्रसिद्ध अछि । तथापि, खलील जिब्रानक कोनो कृतिक मैथिली अनुवाद उपलब्ध अछि वा नहि, से हमरा बूझल नहि । एहि संक्षिप्त भूमिकामे खलील जिब्रानक व्यक्तित्व, कृतित्व आ हुनकर पुस्तक **Broken Wings** आ ओकर 'टूटल पाँखि' नामक हमर अनुवादसँ पाठकके ँ परिचित करायब हमर इष्ट अछि ।

खलील जिब्रानक जन्म 1883 ईसवी मे लेबनानक बेस्सार शहरमे एकटा गरीब इसाइ परिवारमे भेल रहनि । ओहि समयमे लेबनान तुर्की शासनक अधीन परतन्त्र जकाँ छल । समाजमे आर्थिक विपन्नता, राजनीतिक दमन आ धार्मिक अनाचार सर्वत्र व्याप्त रहैक । अत: हिनक परिवार लेबनान सँ कतहु दूर कोनो अवसरक खोजमे छल । अमेरिका तहियो अवसरक भूमि मानल जाइत छलैक । अस्तु, जिब्रानक परिवार उपटि कए बोस्टन गेल छल; जिब्रान तखन छोटे रहथि । बोस्टन मे जिब्रानके ँ किछु दिन पढ़बाक अवसर भेटलनि । किन्तु, बरख दुइएक पछाति जिब्रान पुन: लेबनान आबि अपन सभ्यता-संस्कृति आ मातृभाषाक अध्ययन मे लागि गेलाह । अध्ययनक ओही बीच मे हिनक चित्रकलाक रुचि पुनगए लगलनि आ ई अपन कल्पनासँ अरबी महापुरुष लोकनिक चित्र बनबए लगलाह । चित्रकलाक इएह रुचि पछाति हिनका फ्रांस जा कए चित्रकला सिखबाक हेतु प्रेरित कएलकनि । मुदा, पारिवारिक कारणे ँ फ्रांस सँ पुन: ई अपन परिवारजनक लग बोस्टन आपस आबि गेलाह । छोटे वयस सँ जिब्रान बहुमुखी प्रतिभाक धनी छलाह । हिनका चित्रकलाक

अलावा लिखबाक रुचि सेहो रहनि । मुदा, अंग्रेजी भाषा हिनका ले' नव छलनि । अस्तु, जिब्रान पहिने अपन मातृभाषा अरबीए मे लिखब आरम्भ कएलनि । संयोगसँ लेख सबहक विषयवस्तु सेहो स्थानीय नहि, सार्वलौकिक आ दार्शनिक जकाँ होइनि । एकरा मानव मनक विशेषताए कहबैक, किएक तँ समाज बदलि जाइछ, परिस्थिति बदलि जाइछ, मुदा भोगल पीड़ा, हताशा आ आक्रोश मनसँ कहाँ बिलाइत छैक ? ताहि पर सँ अपन प्रकृति, जन्मजात संस्कार आ परिवेशक प्रति मनक उद्गार आ प्रतिक्रिया तँ रहिते छैक । इएह सब तँ बनबैत छैक सृजनक भावभूमि । फलतः खलील जिब्रान केँ जखन ऊहि भेलनि, मनक सम्पुट मे बन्न सृजन केर बीज क्रमशः अंकुरित होइत गेलनि आ ई सब साहित्यिक ऊर्जा मातृभाषा अरबी केँ सोपैत गेलाह । ओ सब आरम्भिक लेखन जे अमेरिकेक स्थानीय समाचारपत्र सब मे प्रकाशित भेलनि, संगहिँ चित्रांकनक रुचि आ प्रतिभा तँ रहबे करनि, से स्थानीय कलाविद् लोकनि केँ आकृष्ट कएलकनि । ओ लोकनि हिनक कला-साहित्य केँ स्थानीय समाज मे प्रचारित-प्रसारित करबा मे सहयोग तँ करबे कएलखिन, संगहिँ हिनक अवगतिक विकास मे सेहो खुलि कए योगदान कएलखिन । एहि मे सँ एक व्यक्ति, मैरी हैस्केल नामक महिला, हिनक कला प्रशिक्षणक भार उठा लेलखिन । फलतः आगू चलि कए जिब्रान मैरी हैस्केलेक सहायता सँ पुनः पेरिस जा कए विश्वप्रसिद्ध चित्रकार आ मूर्तिकारसब सँ चित्रकला आ मूर्तिकलाक प्रशिक्षण सेहो लेलनि ।

हमरा जनैत, युवावस्थाक मनोभूमि काँच माटिक कुम्हारक कृति थिकैक जे अपन प्रवृत्ति, अनुभव आ परिवेशक आबा मे क्रमशः पकैत तँ छैक किन्तु ओकर किछु अंश सर्वदा काँचे रहैत छैक । मनक ओहि काँच भागक बलेँ मानव-मन आजीवन परिवर्तित होइत रहैछ । ताहि पर पाकलो मनपर जीवनक अनुभव निरंतर नव-नव लेप लगबैत चल जाइत छैक । अनुभवक एहि लेप मे सँ किछु केर रंग तँ अनायास पक्की भए जाइछ, आ किछु कच्ची रंग क्रमशः धोखरि जाइछ । जे किछु । तेँ, हमरा जनैत, सिद्धहस्त कलाकार लोकनिक मार्गदर्शन आ विश्वस्तरीय कलाक अवलोकनक अवसर जिब्रानक प्रवृत्ति, क्षमता, विचार आ कला केँ नव आयाम देलकनि, जे दिनानुदिन विकसित भेल आ अंततः विश्वप्रसिद्ध भेल ।

खलील जिब्रानक जीवनक एकटा आओर घटनाक जे हिनक जीवन दर्शनपर अमिट छाप छोड़लकनि ओ थिक बहाई सम्प्रदायक प्रवर्तक अब्दुल बहा केर जीवन दर्शन सँ जिब्रानक परिचय । बहाई सम्प्रदायक समन्वयवादी विचारधारा जिब्रानक सोच केँ सूफियाना आयाम देलकनि । फलत: परस्पर विरोधी प्रवृत्तिक विचारधारा मे अन्तर्निहित समन्वयक सूत्र आ अनेकता मे एकताक दृष्टि जिब्रानक चिंतन केर आत्मा प्रतीत होइछ ।

जेना पहिने कहलहुँ, जिब्रानक आरम्भिक रचनासब बोस्टन केर स्थानीय समाचारपत्र सब मे प्रकाशित होइत छलनि । मुदा, हिनक पहिल पुस्तकाकार कृति जे लोककेँ आकृष्ट कएलकनि ओ थिक 1908 मे प्रकाशित पोथी **Spirits Rebellious** (क्रन्तिकारी आत्मा) । एहि पोथी मे जिब्रान लेबनानक इसाइ धार्मिक व्यवस्था, धार्मिक अनाचार आ राजनीतिक सत्ताक दमनकारी नीति पर गंभीर प्रहार कएने छथि । जिब्रानक दोसर कृति थिक, **Jesus : Son of Man** (ईशा : मनुष्यक पुत्र) । मानल जाइछ, खलील जिब्रान अब्दुल बहा केर चरित्र सँ एतेक प्रभावित भेल छलाह जे एहि दोसर पोथीक आदर्श चरित्र 'बाहा' प्राय: स्वयं होथि ।

आगू जिब्रान जेना-जेना प्रसिद्धिक सोपान चढ़ैत गेलाह, हिनक पारिवारिक जीवनक दिशा विपरीत होइत गेलनि । ओहि युगमे क्षय-रोग (टीबी) मृत्युक पर्याय मानल जाइत छलैक । टीबीएक प्रकोपेँ हिनक परिवारक अनेक सदस्य काल कवलित भए गेलखिन । पछाति जखन अपन परिवार बसएबाक सोह अएलनि तँ हिनक दृष्टि अपन संपोषक, मुदा वयस मे जेठि, मैरी हैस्केल दिस गेलनि । मुदा, मैरी हैस्केल विवाहक ओ प्रस्ताव अस्वीकार कए देलखिन । तथापि मैरी आ जिब्रानक मित्रता आ सहयोगक सूत्र आजीवनक अक्षुण्ण रहलनि ।

व्यक्तिगत जीवनक एहि सब उतार-चढ़ावक बीच जिब्रानक सृजन निर्बाध चलैत रहलनि । **The Broken Wings** (टूटल पाँखि) एही शृंखलाक कड़ी थिक जे 1912 मे अरबी भाषा मे प्रकाशित भेल छल । एकर पछाति जिब्रानक अनेको पुस्तकाकार कृति अरबी, पछाति जेना-जेना अंग्रेजी मे दक्षता होइत गेलनि, अंग्रेजी मे प्रकाशित होइत रहल जकर

सबहक चर्च एहि छोट भूमिका मे असंभव । तथापि एतए एतबा उल्लेख आवश्यक जे हिनक सब प्रकाशित कृति मे अंग्रेजी मे प्रकाशित पोथी **Prophet** (पैगम्बर) सँ हिनका असली प्रसिद्धि भेटलनि । Prophet नामक पोथी विश्व भरि मे लोकप्रियताक नव कीर्तिमान स्थापित कएलक आ विश्व साहित्य मे खलील जिब्रानक उदय एकटा चमकैत नक्षत्र-जकाँ भेलनि । ओकर पछाति जिब्रान आजीवन सृजनरत रहलाह आ अंततः अमेरिकहि मे 1931 ई. मे 48 वर्षक अल्प आयु मे हिनक निधन भए गेलनि । जिब्रानक सब साहित्य आ व्यक्तिगत पत्राचारक निधि अमेरिकाक नॉर्थ कैरोलिना विश्वविद्यालयक पुस्तकालय मे सुरक्षित अछि ।

टूटल पाँखि आत्मकथापरक कृति थिक । एहि कथा केँ खलील जिब्रानक असफल प्रेमक कथा बूझल जाइछ । एहि कथा मे तत्कालीन लेबनानक समाज मे पसरल रूढ़ि, धार्मिक अनाचार आ पतन पर गंभीर चोट कएल गेल अछि । कथाक भाषा कवितामय छैक जाहि मे जिब्रानक व्यक्तिगत वेदना आ क्रांतिकारी दृष्टि सर्वत्र परिलक्षित अछि, जे पोथी पढ़ला उत्तर स्वतः देखबा मे आओत । ई कथा प्रथमे वाचन मे हमर मन केँ मोहि लेने छल । तेँ हम एकर मैथिली अनुवाद कएल । पछाति आओर कतेक गोटे एकरा पढ़लनि आ प्रभावित भेलाह जाहि सँ हमर उत्साहवर्धन भेल आ हम एकरा प्रकाशित करबाक निर्णय लेल ।

प्रोफेसर डाक्टर भीमनाथ झा– हमरा लोकनिक भीमबाबू– एहि मैथिली अनुवादक पाण्डुलिपि केँ पढ़ि, सुधार करबाक श्रमसाध्य कार्य सहर्ष कएने छथि । ई सहयोग भीमबाबूक स्वभावक अनुकूले थिक । तथापि, हुनक ई गुण हम कोना बिसरि सकैत छियनि ? पछाति प्रकाशन-सहयोगक भार सेहो ओएह लए लेलनि । तेँ, भीमबाबू केँ सादर धन्यवाद । नीक छपाइ ले' प्रिंटवेल प्रेस, दरभंगा केँ सेहो हमर धन्यवाद । आब ई अनुवाद अहाँक हाथ मे अछि । **टूटल पाँखि** क कथा आ हमर अनुवाद जँ जहाँ लोकनि केँ नीक लागल तँ हम अपन परिश्रम सफल बूझब । एतद्धि ।

कीर्तिनाथ झा

पहिल अध्याय

पड़ोसिया लोकनि ! यौवनक आगमन केँ हर्ष सँ आ एकर अवसान केँ अहाँ दुःख सँ स्मरण करैत छी । किन्तु हम ! हमरा एकर अनुभूति एकटा बंदी जकाँ भेल अछि जकरा मात्र ओकर कड़ी आ बेड़ीक स्मरण होइत छैक ।

शैशव आ कैशोर्यक अंतराल केँ अहाँ स्वर्णिम काल कहैत छिऐक, कारण ओहिकाल मे अहाँ लोकनि स्वच्छन्द आ बेपरबाह छलहुँ । किन्तु, हम जीवनक एहि अध्याय केँ मूक वेदनाक काल कहैत छिऐक । कारण, वेदनाक जे बीज ओहि समय मे हमर हृदय मे पैसि गेल छल, से ताधरि ज्ञान आ बुद्धिक अन्वेषण मे बौआइत रहल जाधरि प्रेमक प्रथम किरण आबि कए हमर हृदयक कपाट केँ खोलि कए ओकर प्रत्येक कोन केँ प्रकाशमय नहि कए देलक ।

प्रेम हमरा वाणी आ अश्रु दुनू देलक । अहाँ लोकनि ओहि वाटिका, ओहि फूल, ओहि बाट आ घाट केँ स्मरण करैत होएब जे अहाँक क्रीड़ाक प्रत्यक्षदर्शी छल, अहाँक पवित्र प्रेम-संवाद सुनने छल । हमरो उत्तरी लेबनानक ओहि मनोरम स्थानक स्मरण अछि । जखन-जखन हम अपन आँखि मूनैत छी, हमरा ओ

रहस्यमय घाटी, पहाड़ आ जंगल आँखिक समक्ष नाचि जाइत अछि जे अपन महानता सँ गगन-मंडल केँ चूमि लेबाक हेतु सतत प्रयत्नशील रहैत अछि ।

नगरक कोलाहल सँ जखन-जखन हम अपन कान मूनि लैत छी, हमरा कल-कल करैत सरिताक गीत आ वृक्ष-शाखक संगीत सूनि पड़ैत अछि । एहि सब सुषमाक दर्शनक हम सर्वदा ओहिना पियासल छी जेना कोनो स्तनपायी शिशु केँ मातृदुग्धक पिपासा रहैत छैक । किन्तु ओ सब यौवनक अंधकार मे बंदी हमर आत्मा केँ ओहिना बेधि रहल छल जेना पिजड़ा मे बन्न पक्षी आन पक्षी-समूह केँ असीमित आकाश मे उड़ैत देखि पीड़ित भए जाइछ । ई वन-प्रान्तर आ घाटी हमर कल्पना केँ उर्वर बनओलक, किन्तु अपन चिंतन सँ हमर हृदय केँ निराशाक निर्मम जाल मे फँसा देलक ।

जखन-जखन हमर दृष्टि धरतीक उन्मुक्त आँचर पर पड़ल, हमर निराशा आओर बढ़ि गेल, किन्तु एहि निराशाक कारण हम बूझि नहि सकलहुँ । जखन-जखन हमर नजरि विस्तृत आकाश पर पड़ल, हमर मोन छोटे होइत चल गेल । पक्षीक कलरव आ सरिताक कल-कल हमरा ले' सर्वदा पीड़ाजनके रहल, यद्यपि हम ओहि पीड़ाक कारण केँ बूझि नहि सकलहुँ ।

कहबी छैक- अनभिजात्य प्रकृति मनुष्य केँ संवेदनशून्य बना दैत छैक आ संवदेनशून्यता ओकरा अनुत्तरदायी बना दैत छैक । किन्तु, ई ओकरा ले' सत्य भए सकैत छैक जे चेतनाहीन जकाँ जन्म लैत अछि आ चेतनशून्ये रहि जाइत अछि । किन्तु, एकटा संवेदनशील नेना जकर अनुभूति प्रखर होइत छैक, मुदा ज्ञानहीनताक गर्भ मे पड़ल रहैछ, ओ एहि सृष्टिक सर्वाधिक अभागल जीव थिक, कारण ओ दू विपरीत शक्तिक प्रताड़नाक शिकार भए जाइछ । पहिल शक्ति

ओकरा संसारक ओहि पारक मानवीय अस्तित्वक दर्शन करबैत छैक, किन्तु दोसर शक्ति बलपूर्वक ओकरा अंधकारग्रस्त पृथ्वीक छाती सँ बान्हि दैत छैक । एकाकी जीवनक हाथ मोलायम आ रेशमी होइत छैक, किन्तु ई अपन बलिष्ठ आंगुर सँ मनुष्यक हृदयकेँ दूहि ओकरा भयानक रूप सँ पीड़ित कए दैत छैक ।

एहि उदासी केँ भोगैत शिशुक हृदय फुलाइत कमल जकाँ होइत छैक जे बसातक झोँक मे थरथराइतो भोरक प्रकाश मे अपन आँखि तँ खोलैत अछि, किन्तु अन्हारक छाहरिक आगमनक पूर्वहि अपन पात धरि केँ समटि लैत अछि । एहन किशोर केँ जँ कोनो संगी-साथी आ मनोरंजन नहि होइक तँ ओकर जीवन एकटा एहन बंदी सन होइछ जे कारागारक मकड़ाक जालक अतिरिक्त ने किछु देखि सकैछ आ ने फनिगा-फतिङाक ध्वनिक अतिरिक्त किछु सूनि सकैछ ।

किन्तु, हमर कैशोर्यक निरंतर उदासीक कारण ने मित्रक कमी आ ने मनोरंजनक अभाव छल । कारण, मित्र हमरा भेटि सकैत छल आ मनोरंजनक अभावक अनुभव नहि करितहुँ । किन्तु, हमर उदासी अन्तर्जात छल, तेँ हम एकाकीपन सँ प्रेम करए लागल छलहुँ । ई अवगुण हमरा अपन कैशोर्यक पाँखि सँ वंचित कए देलक, हमर अस्तित्व केँ ओहि पोखरिक पानि जकाँ विवश बना देलक जकर अस्तित्व मोहार सँ सीमाबद्ध रहैछ, जाहि मे रंग-बिरंगी मेघ आ गाछ-वृक्ष प्रतिविम्बित भए सकैत छैक, किन्तु ओ गीत गबैत सरिता मे परिवर्तित भए सागरक हृदय सँ आलिङ्गन नहि कए सकैछ ।

अठारहम वर्ष सँ पूर्व हमर जीवन एहने छल । ओ वयस हमर जीवनक असीम उत्कर्षक वर्ष छल, कारण ओ अवस्था हमर ज्ञान केँ जगा हमरा मानवीय जीवनक विवशता सँ परिचय करओने

छल । ओही वर्ष हमर पुनर्जन्म भेल छल जकर अस्तित्वक बिना किताब मे हमर जीवन एकटा सादा पन्ना मात्र रहैत । ओही वर्ष हम स्वर्गक देवांगना केँ लावण्यमयी कन्याक आँखि सँ अपना दिस तकैत देखने छलहुँ । आ ओही समय मे हम एकटा दुष्टक हृदय मे (नरकक) शैतान केँ सेहो पनपैत देखने छलहुँ । जे मनुष्य जीवनक सौंदर्य आ ओकर भयंकरता मे देवांगना आ शैतान दुहूक दर्शन नहि करैछ, ओकर जीवन ज्ञान सँ दूरे रहतैक, ओकर हृदय प्रेम–भाव सँ शून्ये रहतैक ।

दोसर अध्याय

ओहि विशिष्ट वर्षक हमर वसंत बेरूत मे बीतल छल । उद्यान सब 'निशान'क फूल सँ लदल छलैक । सस्य-श्यामला धरती पर हरियर घासक गलीचा लगैत छलैक जेना धरतीक हृदयकेँ आकाशक आगाँ अनावृत कए देने हो ! नवकनियाँ जकाँ सुगंधित फूलक आभूषण सँ लदल संतोला आ सेव केर गाछ लगैत छलैक जेना कविक कल्पना केँ प्रेरणा आ उत्साह देबा लेल प्रकृति द्वारा विशेषतः पठाओल गेल हो !

वसंत तँ सर्वत्र रमणीय होइत छैक, किन्तु बेरूत मे ओकर छटा किछु अनुपमे होइत छैक । वसंत संसार भरिक भ्रमण करैत अछि किन्तु बेरूत पर ओ सभ ठाम सँ आबि कए मरड़ाइत रहैत अछि, राजा आ मनीषी सँ वार्तालाप करैत अछि; नदी आ लेबनानक पवित्र देवदारु वृक्षक संग-संग राजा सुलेमानक प्राचीन उत्कर्षक स्मृति-गीत गबैत रहैत अछि । शिशिरक थाल-कादो आ ग्रीष्मक धूल-धूसरित बसातक प्रकोप सँ मुक्त बेरूत वसंतक अबिते नवकनियाँ जकाँ सजि जाइत अछि । लगैत छैक जेना ओ जलधाराक कात मे बैसि कए अपन चिक्कन त्वचाकेँ स्वर्णिम रौद मे सुखबैत कोनो जलपरी हो !

'निशान' मासक एक दिन हम लेबनानक गरिमामय नगर सँ किछु दूर तक मित्र सँ भेट करए गेल रही । गप्प-सप्पक क्रम मे करीब पैंतालिसेक अवस्थाक एक प्रतिष्ठित सन लोक ओतए उपस्थित भेलाह । हम हुनक स्वागत मे उठि कए ठाढ़ भेलहुँ तँ हमर मित्र हमर प्रशंसा करैत हुनका सँ हमर परिचय करौलनि । हुनक नाम फेरिस इफानी करामी छलनि । किछु क्षणधरि हमरा दिस देखि कए वृद्ध जेना किछु स्मरण करबाक प्रयास कएलनि आ फेर ओ हमर माथ छूबि कए मुस्काइत बजलाह-"अहाँ हमर एक अत्यन्त प्रिय मित्रक पुत्र छी । अपन मित्रक प्रतिबिम्ब अहाँ मे पाबि हम परम आह्लादित छी ।"

हुनक वार्तालाप सँ हम बिनु प्रभावित भेने नहि रहि सकलहुँ । जेना आगत बिहाड़िक आभास मात्र सँ चिड़ै-चुनमुनी अपन खोँता दिस उड़ि जाइत अछि, करामी हमरा तहिना अप्पन गप्प सँ आकर्षित कएने छलाह । गप्पक क्रम मे ओ हमर पिता आओर हुनक बीचक मैत्री आ संग-संग बिताओल समयक चर्चा करैत रहलाह ।

वृद्ध व्यक्ति केँ अतीतक स्मृति ओहिना आकृष्ट करैत छैक जेना परदेशमे भोतिआएल यात्री अपन देश-कोस दिस आपस होयबाक धुनि मे लागल रहैछ । ओकरा अपन अतीतक कथा सुनएबा मे ओतबे रुचि होइत छैक जतेक कोनो कवि केँ अपन सर्वोत्तम कविताक पाठ मे । वास्तव मे आत्मा सँ ओ अपन अतीते मे जीबैत अछि, कारण वर्तमान द्रुतगामी होइत छैक आ भविष्य सतत अवसानक भयानक छाहरि सँ अन्हार प्रतीत होइत छैक ।

करामीक स्मृतिक खीसाक एक घंटा कोनो ससरैत छाहरि जकाँ बिला गेल । किन्तु जखन ओ जएबा ले' भेलाह तँ वात्सल्य भाव सँ हमर कान्ह पर हाथ धरैत कहलनि- "अहाँक पिताकेँ देखना बीस वर्ष बीति गेल । विश्वास अछि, हमरा ओतए अहाँ बराबरि अवश्य आएब ।"

अपन पिताक ओहि मित्र कें हम हुनक आग्रह स्वीकार करबाक वचन देलियनि ।

ओहि वृद्धक प्रस्थानक पश्चात् हुनक प्रति हमर जिज्ञासाक उत्तरमे हमर मित्र कहलनि– "बेरूत मे हम आओर कोनो एहन व्यक्ति सँ परिचित नहि छी जकर ऐश्वर्य ओकरा दयालु बनौने होइक आ दयालुता ओकरा विपुल ऐश्वर्य प्रदान कएने होइक । एहि संसार मे एहन लोक कमे होइत अछि जे बिना ककरो हानि कएने जीवन निर्वाह कए लैत हो । करामी एहने व्यक्ति छथि । किन्तु, एहन व्यक्तिक जीवन सामान्यतया दयनीये होइत छैक, कारण एहि प्रकारक व्यक्ति ओतेक चतुर–चलाक नहि होइत अछि जे धूर्त्त सभक चालि सँ अपनाकें बचा सकए । फेरिस इफानी कें अपने सन एकटा पुत्री छनि जकर सौंदर्य अवर्णनीय छैक, किन्तु ओकरो दयनीय परिणति निश्चित छैक, कारण ओहो अपन पिताक सम्पत्तिक कारण भयानक दुर्घटनाक कछेर पर ठाढ़ि अछि ।"

गप्पक क्रम मे अपन मित्रक चेहरा पर वेदनाक स्याह छाया हमरा स्पष्टतः दृष्टिगोचर भेल छल । ओ आगाँ कहलनि– "फेरिस इफानी पवित्र हृदयक मनुष्य छथि, किन्तु हुनका मे इच्छा–शक्तिक अभाव छनि । लोक हुनका आन्हर जकाँ कुबाटक बाट देखा रहल छनि । हुनक बेटी अपन तीक्ष्ण बुद्धि आ स्वाभिमानक अछैतो हुनक अवज्ञा नहि कए सकैत छनि । ई ओहि वृद्ध आ हुनक बेटीक जीवनक सत्य थिक । आ एकटा शैतान, जे पादरी अछि, एहि सत्य सँ परिचित अछि । ओ अपन उपदेशक दोग मे अपन धूर्त्तता कें नुकौने अछि । लोक कें लगैत छैक जे ओ दयालु आ पवित्र अछि, कारण ओ एहि धर्मभूमिक धर्मगुरु थिक । लोक तें ओकर पूजा करैत छैक, आज्ञा शिरोधार्य करैत छैक । किन्तु ओ सबकें सत्य सँ अनभिज्ञ भेड़ी–बकरी जकाँ बेरबादीक बलिबेदी पर लए जा कए ठाढ़

कए दैत छैक । एहि पादरी केँ एकटा भ्रष्ट आ घृणास्पद भातिज छैक । आइ ने काल्हि ओ पादरी फेरिस इफानीक कन्याक पवित्र हाथकेँ विवाह-मण्डप पर ओहि भ्रष्टक हाथ धरा कए दिनक प्रकाश केँ रातिक गर्भ मे समर्पित कए देतैक । एहि सँ बेसी फेरिस इफानी आ हुनक बेटीक विषय मे हमरा किछु ज्ञात नहि अछि, तेँ हमरा सँ आओर किछु जुनि पूछू ।" ई कहैत ओ मुँह घुमा कए जंगला क बाहर शून्य मे ताकए लगलाह, मने ओ प्रकृतिक सौंदर्य मे जीवनक समस्याक समाधान ताकि रहल होथि !

आपस होइत काल हम अपन मित्र केँ कहलियनि- "हम निकटे भविष्य मे इफानीक ओतए जाएब । बस, अपन पिताक मित्रक प्रति अपन वचन पूरा करक हेतु ।" ओ किछु क्षण धरि हमरा दिस तेना तकैत रहलाह जेना हमर गप्प हुनका मे किछु नव आशा जगौने होइनि । प्रेम, दया आ भय सँ मिश्रित हुनक विचित्र दृष्टि सँ हमरा लागल जेना ओ किछु एहन दैवी पूर्वाभास सँ ग्रस्त छलाह जे सामान्य मनुष्यक दृष्टि सँ ऊपर छैक । जखन हम चलबा ले' भेलहुँ तँ हुनक ठोर सेहो किछु कहबा लेल थरथरएलनि, किन्तु ओ मूके रहलाह । हुनक ओहि विचित्र दृष्टिक अर्थ हमरा ओहि दिन धरि नहि लागल छल जाधरि अनुभवक ओहि भूमि पर उतरबाक हमरा अवसर नहि प्राप्त भेल छल जतए एक हृदय केँ दोसर हृदय मात्र प्रज्ञाक बलेँ बुझि पबैत छैक, जतए ज्ञानक बलेँ आत्मा परिपक्व होइत छैक ।

तेसर अध्याय

एकाकीपन सँ किछुए दिन मे हमर मोन उबिआए लागल । पढ़बो सँ मोन अकछि गेल छल तेँ एक दिन एकटा तांगा भाड़ा पर लऽ कए फेरिस इफानीक घर दिस बिदा भेलहुँ । देवदारुक जंगल लग सँ इफानीक ओतए ले' एकटा भिन्न बाट फूटैत छलैक जकर दूनू कात दूर-दूर धरि विस्तृत हरिअर घास, अंगूरक लत्ती आ 'निशान'क रंग-विरंगी फूल सहजहि हमरा मोहि लेने छल ।

एहि बाट पर किछु क्षणक यात्राक पश्चात् इफानीक सुन्दर फुलबाड़ीक बीच अवस्थित घर पहुँचलहुँ । एहि घरक लग मे आन कोनो घर नहि छलैक । हमरा तांगा सँ उतरैत देखि इफानी स्वयं हमर स्वागतार्थ आबि आदरपूर्वक घर मे लए गेलाह आ अपन समीपे मे हमरा बैसा लेलनि । लागल जेना पुत्र केँ देखि पिता प्रमुदित भऽ गेल होथि ! सामान्य गप्प-सप्पक पश्चात् बड़ी काल धरि ओ हमरा सँ हमर शिक्षा, जीवन आ भविष्यक विषय मे विभिन्न प्रश्न पूछैत रहलाह । हम हुनक सब जिज्ञासाकेँ आत्मविश्वास आ आशाक संग शान्त करैत रहलियनि, कारण हमरा लागि रहल छल जे हम स्वप्नक संसार मे आशाक प्रशान्त समुद्र पर बहैत चल जा रहल होइ आ हमर कान मे उत्कर्षक मधुर गीत प्रतिध्वनित भए रहल हो ! एही बीच एकटा सुन्दर तरुणी केँ उज्जर रेशमी परिधान मे मखमली

पर्दाक पाछाँ सँ हठात् अवतीर्ण भए अपना दिस अबैत देखलियनि । इफानी आ हम उठि कए ठाढ़ भए गेलहुँ । हम हाथ मिलबैत जखन हुनक अभिवादन कएलियनि तँ हमर हृदय मे अकस्मात् एकटा विचित्र पीड़ा जागि उठल । हमरा लागल जेना हम श्वेत पुष्प स्पर्श कएने होइ !

"ई हमर पुत्री थिकीह" कहैत इफानी हमर परिचय हुनका सँ करओलनि आ पुन: अपन कन्या दिस घूमैत बजलाह– "भाग्य कतेक दिनक बाद हमरा एकटा अपन परम प्रिय मित्र सँ हुनक पुत्रक रूपमे भेट करओलक अछि ।" सलमा किछु विस्मय सँ हमरा दिस क्षण भरि देखैत रहलीह । जेना ककरो आएब ओहि घर मे अति अस्वाभाविक हो !

हम सब किछु काल धरि नि:शब्द बैसल रहलहुँ । जेना, सलमाक नैसर्गिक हृदयक इएह प्रशंसा होइक ! किन्तु, नि:शब्दताक भान होइते ओ मुस्काइत बजलीह– "हमर पिता कतेको बेर अपन कैशोर्य आ जवानीक बीतल दिनक खीसा कहने होएताह जाहि मे अहूँक पिताक चर्च रहैत छल । जँ अहाँक पिता सेहो ई सब उपाख्यान अहाँ केँ सुनौने होथि तँ मानक चाही, ई हमर सभक प्रथम परिचय नहि थीक ।"

अपन पुत्रीकेँ एहि आत्मीयता सँ गप्प करैत देखि वृद्ध अति प्रसन्न होइत बजलाह– ''सलमा बड़ संवेदनशील अछि । ई प्रत्येक वस्तु केँ हृदयक आँखि सँ देखैत अछि ।"

हमर व्यक्तित्व सँ अभिभूत जकाँ भेल इफानी जेना सुदूर स्मृति मे हेड़ा गेल छलाह ! किन्तु, ओ बड़ी काल धरि हमरा संग पटुता सँ गप्प करैत रहलाह ।

किन्तु, अतीत केर स्वप्न मे हेड़ाएल हम जखन प्रश्नसूचक

दृष्टि सँ हुनका देखलियनि तँ ओ किछु क्षण धरि हमरा ओहिना देखैत रहलाह जेना अपन जीवन मे कतेक अन्हड़-तूफानक सामना करैत अडिग विशाल वृक्ष भोरुका मन्द समीर मे कँपैत अंकुर केँ अपन छाहरि प्रदान कए रहल होइक ! किन्तु, सलमा चुप्पे रहलीह । बीच-बीच मे कखनो ओ हमरा आ कखनो अपन पिता केँ देखैत रहलीह, जेना ओ जीवनक नाटकक प्रथम आ अन्तिम दुनू अंक केँ पढ़बा मे लागलि होथि ।

दिन द्रुत गति सँ भागि रहल छल, किन्तु ओहि दिन सूर्यास्तक ओहि दानवी पाण्डुर किरण केँ हम लेबनानक पहाड़ केँ चूमैत स्पष्ट देखि रहल छलहुँ । फेरिस इफानी अपन अनुभवक कथा सुनबैत रहलाह आ हम ओहि कथा केँ मंत्रमुग्ध भए सुनैत रहलहुँ । एहि सँ जेना ठीके हुनक व्यथा सुख मे परिवर्त्तित भए गेल छलनि ।

सलमा बराबरि नि:शब्द जंगला लग बैसि रहलीह । सौंदर्यक अपन एक भिन्ने नैसर्गिक भाषा होइत छैक, जकर तुलना ठोर आ जीहक भाषा सँ नहि कएल जा सकैछ । समय आ मनुष्यक जाति आ धर्म सँ भिन्न ई भाषा ओहि शान्त झील जकाँ होइछ जे कल-कल करैत सरिताक धार केँ अपन हृदयक परिसरमे आकर्षित कए ओकरा नि:शब्द कए दैत छैक ।

मनुष्यक आत्मा मात्र सौंदर्यक रहस्य केँ बूझि सकैछ, ओकरा संग जीवि सकैछ आ विकसित भए सकैछ । मस्तिष्कक लेल ई दुर्बोध, आ शब्द एकर वर्णन मे असमर्थ । ई एकटा एहन संवेदना थीक जे दर्शक आ दर्शनीय दुनूक हृदय सँ उपजैत छैक किन्तु मानवीय आँखिक लेल अदृश्य छैक । वास्तविक सौंदर्य एकटा एहन किरण थीक जे पवित्र आत्मा सँ विकसित भए शरीर केँ ओहिना प्रदीप्त कए दैत छैक जेना जीवन-धारा अवनीक गर्भ सँ प्रवाहित भए पुष्प केँ रंगमय आ सुगंधमय बना दैत छैक । प्रकृति

आ पुरुषक बीचक आत्माक सान्निध्य— ओकर बीचक प्रेम— मात्र मे वास्तविक सौंदर्य निवास करैत छैक ।

की सलमाक आ हमर आत्मा ठीके ओहि दिन एक-दोसर केँ छूबि लेने छल जखन हमरा सभक भेट भेल छल ? की ओही शक्तिक फलस्वरूप ओहि दिन ओ हमरो एहि सृष्टिक सर्वाधिक सौंदर्यमयी तरुणी लागलि छलि ? आ, की हम यौवनक रमकी मात्र मे ओहि सब वस्तुक अनुभव कए रहल छलहुँ जे कहियो यथार्थ नहि छलैक ? की ओहि दिन हमर यौवन हमर स्थूल आँखिकेँ आन्हर बना देने छल आ हम ओहि अन्हार मे ओकर आँखिक अनुपम ज्योतिक, ओकर अधरक माधुर्यक, ओकर अप्रतिम आकृतिक मात्र कल्पना कए रहल छलहुँ ?

एहि सब प्रश्नक उत्तर देब हमर सामर्थ्य सँ बाहर अछि । किन्तु, हम सत्यत: कहैत छी- मिलनक ओहि क्षण मे हम जाहि भावक अनुभव कएने छलहुँ, से हमरा ओहि सँ पूर्व कहियो नहि भेल छल । सृष्टिक आरंभ मे अनादि जल-राशि पर मरड़ाइत शक्ति जकाँ एक नवीन प्रकारक स्नेह हमर हृदय मे ओहि दिन चुपचाप समाहित भए गेल छल । आ ओएह स्नेह हमर खुशी आ उदासी, दुनूक जनक छल ।

सलमा सँ प्रथम भेटक प्रथम घड़ी एहिना बीति गेल आ ईश्वरीय इच्छा हमरा ऐकान्तिकता आ तारुण्यक बंधन सँ मुक्त कए प्रेमक बाट पर प्रवृत्त कए देलक ।

प्रेम संसारक एकमात्र स्वतंत्रता छैक, कारण ओ आत्माकेँ एतेक ऊपर उठा दैत छैक जे लौकिक नीति आ प्रकृतिक रीति ओकर मार्ग केँ परिवर्तित नहि कए सकैछ ।

जखन हम उठि कए चलए लगलहुँ तँ इफानी हमरा लग

आबि कए गंभीरतापूर्वक कहलनि– "बाउ, आब जखन एहि घरक बाट अहाँ केँ देखल भए गेल तँ अबैत–जाइत रहब । एहि घर केँ अपने घर बुझू । हम अहाँक पितातुल्य छी आ सलमा अहाँक बहिन जकाँ अछि ।" —ई कहैत ओ सलमा दिस आकृष्ट भेलाह, मने ओ अपन एहि वक्तव्यक प्रति सलमाक प्रतिक्रिया केँ थाहि रहल होथि ! सलमा स्वीकृति मे गरदनि हिलबैत चिरपरिचित जकाँ हमरा दिस एक बेर नजरि घुमौलक ।

फेरिस इफानीक ई शब्द हमरा सलमाक संग–संग प्रेमक बलिबेदी पर प्रस्तुत कए देलक । ई शब्द सब ओ नैसर्गिक गीत छल जे परम सुख सँ आरंभ भए दुःख मे समाप्त भए गेल । ओ शब्द हमरा सभक आत्माकेँ प्रकाशक प्रदेश देखओलक, ओ भाषण हमरा सभक लेल सुख आ दुःख दुनूक घोँट छल ।

हम बिदा भए गेलहुँ । किन्तु जखन ओ वृद्ध हमरा अरियातैत फुलबाड़ीक कोन धरि आएल छलाह, तखनहुँ हमर हृदय पिपासु मनुक्खक ठोर जकाँ काँपि रहल छल ।

चारिम अध्याय

‘निशान’क मास लगभग बीति चुकल छल । हम इफानीक ओतए बराबरि जाइत रहलहुँ आ हुनक सुन्दर उद्यान मे बराबरि सलमा सँ भेट होइत रहल । यद्यपि हम ओकर चातुर्य आ लावण्य पर मुग्ध छलहुँ, तथापि ओकर निरन्तर उदासी हमरा सँ नुकाएल नहि रहल । हमरा एकटा अदृश्य शक्ति ओकरा दिस आकर्षित कएने जा रहल छल । ओकर संगक प्रत्येक भेट हमरा ले’ ओकर सौंदर्यक नव-नव अर्थ खोलि रहल छल । प्रत्येक भेट ताधरि ओकर कोमल आत्माक नवीन परिचय दैत रहल जाधरि हमरा ई स्पष्ट प्रतीत नहि भए गेल जे ओकर हृदय एकटा एहन ग्रन्थ छलैक जकरा हम पढ़ि सकैत छलहुँ, ओकर प्रशंसा कए सकैत छलहुँ, किन्तु ओकरा पढ़ब कहियो समाप्त नहि कए सकैत छलहुँ ।

एकटा नारी, ईश्वर जकर आत्मा आ शरीर दुनूकेँ सौंदर्य प्रदान कएने छथिन, एहन सत्य होइछ जे स्पष्ट सेहो रहैछ आ गुप्त सेहो, जकरा जँ बूझल जा सकैछ तँ मात्र प्रेमे सँ, जँ स्पर्श कएल जा सकैछ तँ गुणे सँ । एहन नारी जलवाष्प जकाँ वर्णनातीत होइछ ।

सलमाक तन आ मन दुनू सुन्दर छलैक । किन्तु ओकर वर्णन हम तकरा की सुना सकैत छिऐक जे ओकरा सँ अपरिचित

अछि ! एकटा मृतात्मा बुलबुलक कलरव गुलाबक सुगंधि आ झरनाक आहि केँ कोना स्मरण कए सकैछ ? की बेड़ी मे जकड़ल बंदी प्रातःकालीन समीरक सहगामी भए सकैछ ? की शब्दहीनता मृत्यु सँ बेसी दुःखद नहि छैक ? हम सत्यनिष्ठापूर्वक सलमाक बहुरंगी चित्र उतारबा मे असमर्थ छी । की तेँ स्वाभिमान हमरा सलमाक वर्णन करबा मे रोकि रहल अछि ? किन्तु रेगिस्तान मे फँसल भुखाएल यात्री सुखाएल रोटी केँ खाएब मात्र एहि हेतु नहि नकारि सकैछ जे ईश्वर ओकरा लेल विविध व्यंजन प्रस्तुत नहि कएलथिन ।

धवल रेशमी परिधान मे सलमा खिड़की सँ अबैत चन्द्रमाक सुडौल किरण जकाँ प्रतीत होइत छलि । ओकर चलब लयात्मक आ गरिमामय लगैत छलैक । ओकर वाणी मृदु आ मधुर छलैक । ओकर ठोर सँ निःसृत शब्द बसात मे फूलक पत्ती पर टघरैत ओसक बुन्न जकाँ प्रतीत होइत छलैक । ओह ! सलमाक आकृति, ओकर मुँह पर प्रतिविम्बित आन्तरिक पीड़ाक छाया आ नैसर्गिक कान्तिक वर्णन शब्द मे नहि भए सकैछ ।

सलमाक सौंदर्य अपरिमेय छलैक, ओ एकटा अद्भुत स्वप्न छलैक जकर अनुकरण चित्रकारक तूलिका वा मूर्त्तिकारक छेनी नहि कए सकैछ । सलमाक सौंदर्य ओकर स्वर्णिम केश मे नहि छलैक, अपितु ओहि गुण आ पवित्रता मे छलैक जे ओकर परिवेश मे सर्वत्र विद्यमान छलैक । ओकर सौंदर्य ओकर पैघ-पैघ आँखि मे नहि छलैक, प्रत्युत ओहि प्रकाश मे छलैक जे निरन्तर ओहिसँ विकरित होइत छलैक । ओकर सौंदर्य ओकर लाल-लाल ठोरो मे नहि छलैक, अपितु छलैक ओकर वाणी मे । ओकर सौंदर्य ओकर शंख-सदृश ग्रीवो मे नहि छलैक, अपितु छलैक ओकर ग्रीवाक लोच मे । ओकर सौंदर्य ओकर सुडौल देह-यष्टिओ मे नहि छलैक, प्रत्युत छलैक

ओकर आत्माक पवित्रता मे जे एकटा धवल प्रकाशपुंज जकाँ धरती आ नभमण्डलक मध्य सतत जाज्वल्यमान रहैत छलैक ।

ओकर सौंदर्य कविताक वरदान जकाँ छलैक । किन्तु, कवि एकटा दु:खी आत्मा होइछ, कारण ओकर कल्पना यद्यपि कतबो ऊँच पहुँचि जाइक, ओकर आत्मा सर्वदा अश्रु मे डूबल रहतैक ।

सलमा गप्पी सँ बेसी चिंतनशील छलि । ओकर नि:शब्दता संगीत जकाँ होइत छलैक जे मनुष्य केँ ओहि स्वप्नक संसार मे पहुँचा दैत छलैक जतए ओ अपन हृदयक धड़कन सुनि सकैत छलि, जतए ओकर अपन चिंतन आ अनुभूतिक छाहरि ओकर आँखि मे सोझे देखैत छलैक ।

ओ आजीवन गहन उदासीक आवरण धारण कएने रहलि, जे ओकर सौंदर्य आ गरिमा केँ ओहिना बढ़ा दैत छलैक जेना भोरुका कुहेस मजरल गाछ केँ रमणीयतर बना दैत छैक ।

उदासी हमर आ ओकर आत्माक बीचक सूत्र छल । कारण आकृति मे दुनू गोटे एक-दोसराक मनोभाव आ हृदयक अन्तर्ध्वनि पढ़ि सकैत छलहुँ । ईश्वर दूटा शरीरकेँ एकाकार कए देने छलाह, जकर पृथकीकरण मात्र दु:खदे टा भए सकैत छल ।

पीड़िते आत्माक सामीप्य मे दोसर पीड़ित आत्मा केँ विश्रामक अनुभूति होइछ । अनभिज्ञ प्रदेश मे भोतिआएल दू टा व्यक्ति एक-दोसरा केँ पाबि कए प्रसन्न होइछ आ ओ एक-दोसराक संग सप्रेम सम्मिलित होइछ । जे आत्मा दु:खक माध्यम सँ बान्हल जाइछ, सुखक उन्माद मे ओकर बंधन टुटि नहि सकैछ । अश्रु-प्रक्षालित प्रेम सर्वदा पवित्र आ सुन्दर होएतैक ।

पाँचम अध्याय

एक राति इफानी हमरा नोत देलनि । हम हुनक निमंत्रण केँ स्वीकार कएलियनि; हमर आत्मा जेना सलमाक हाथक निर्मित विशिष्ट भोजन लेल लालायित छल । कारण, एहि प्रकारक विशिष्ट भोजन जतेक करू, आत्मा मे ओकरा ले' ओतबे भूख जगैत जाइत छैक । ई वैह भोजन छल जे अरबी कवि कैश दाँते आ साफोक हृदय मे अग्नि-ज्वाला प्रज्वलित कए देने छलनि । ई वैह भोजन छल जे जगन्माता अपन दुलारक माधुर्य आ नोरक कटुता सँ बनबैत छथि ।

इफानीक घर लग पहुँचिते देखलहुँ जे सलमा एकटा गाछ मे ओङठि कए बैसलि अछि, जेना ओ ओतुक्का पहरेदारनी हो ! किन्तु, अपन धवल परिधान मे ओ नबकनियाँ जकाँ लागि रहलि छलि । हमहूँ ओतहि जाकए चुपचाप बैसि गेलहुँ । किछु बजबा मे हमर वाणी असमर्थ छल, तेँ हमहूँ हृदयक भाषा— निःशब्दता— क आश्रय लेलहुँ । किन्तु हमरा लागल जेना सलमा हमर मूक सम्प्रेषणकेँ ध्यानपूर्वक सुनि रहलि छलि आ अपन आँखि सँ हमर आत्माक छाया केँ स्पष्टतः देखि रहलि छलि ।

किछुए क्षणक पश्चात् वृद्ध इफानी आबि कए हमर अभिवादन

कएलनि । आशीर्वादक मुद्रा मे जखन ओ हमरा दिस अपन हाथ बढ़ौलनि तँ हमरा लागल जेना अपन बेटी आ हमर बीच अदृश्य बंधन केँ ओ आशीष दए रहल होथि । ओ बजलाह– "चलू, भोजन तैयार अछि ।" हमहूँ सब उठि कए चुपचाप हुनक अनुसरण करए लगलहुँ । हमर प्रति इफानीक एहि वात्सल्य भावक प्रदर्शन सँ सलमाक आँखि मे एक नव ज्योति चमकि आएल छलैक ।

हम सब भोजन आ पुरान सुराक आस्वाद करैत बैसल छलहुँ, किन्तु हमर सभक आत्मा भविष्यक कठिनताक स्वप्न मे लीन कोनो दोसरे दुनियाँ मे विचरण कए रहल छल ।

निजी चिन्तन मे पृथक तीन व्यक्ति प्रेमक धरातल पर एकाकार छल । जिनगीक नाटकक तीनटा पात्र—अपन पुत्री केँ अत्यन्त प्रेम करैत ओकर खुशीक लेल चिन्तित पिता; भविष्यक प्रति आशंकित युवती; चिंतित आ अनुभवहीन स्वप्नदर्शी युवक जे प्रेमक उत्कर्ष केँ पएबा ले' चंचल छल, किन्तु अपना केँ ऊपर उठएबा मे असमर्थ । एकान्त निवासक ओ गोधूलि–वेला खाइत–पीबैत बीति रहल छल । किन्तु, हमर सभक पेयक अन्तिम घोँट मे निश्चिते आगत जीवनक कटुता आ चिंता सम्मिश्रित छल ।

हम सब जखने पात पर सँ उठबा पर छलहुँ कि इफानी केँ घरक दासी आबि कए कोनो आगंतुकक सूचना देलकनि ।

"के थिकाह ?"

'पादरीक दूत ।'

क्षण भरि ले' फेरिस इफानी कोनो दैवी पूर्वाभास सँ ग्रस्त जकाँ अपन पुत्री दिस तकैत रहलाह आ पुनः दासी दिस अभिमुख भए बजलाह– "भीतरे बजा लहुन हुनका ।"

दासी चल गेलि ।

"परम पूज्य पादरी अपने सँ किछु गप्प करए चाहैत छथि । तेँ, ओ अपन बग्घीक संग हमरा अपनेकेँ बजा अनबा लेल पठौने छथि ।" —कहैत एकटा मुछैल व्यक्ति भीतर आबि इफानीक अभिवादन कएलथिन । क्षण भरि मे वृद्धक आकृति पर हासक बदला एकटा गहन चिंता घनीभूत भए अएलनि ।

किछु क्षणक चिंतामग्नताक पश्चात् ओ हमरा दिस अभिमुख भए बजलाह– "हम जाधरि अबैत छी, अहाँ एतहि रहब । एहि जनशून्य घर मे दोसरातिक उपस्थिति सँ सलमा केँ भर होएतैक ।" लजाइत सलमा स्वीकृतिक मुद्रामे गरदनि हिलबैत बजलीह– "बाबूजी, हम हिनक पूर्ण देखरेख करबनि ।"

जाधरि पादरीक बग्घी आँखि सँ अदृश्य नहि भए गेल, सलमा ओम्हरे तकैत रहलीह । तत्पश्चात् हम सब एक–दोसराक समक्ष मखमली दीवान पर बैसि गेलहुँ । लजायलि सलमा भोरुका बसात मे हरिअर घासक गलीचा पर नत भेल 'लिली' फूल जकाँ लगैत छलि । एकरो ईश्वरीए इच्छा अथवा कृपा कहि सकैत छिऐक जे ओहि राति सलमाक साहचर्यक हम एकाकी आस्वादक रही । लगैत छल, ताहीखन प्रेम, सौंदर्य, नीरवता आ गुण एकाकार भए गेल छल ।

किछु काल धरि हम सब एक–दोसराक मौन तोड़बाक प्रतीक्षा मे बैसल रहलहुँ । किन्तु, दू हृदयक बीचक माध्यम वाणिए टा नहि होइछ । हृदयक सामीप्य खाली वाणिए टा सँ स्थापित नहि होइत छैक । वाणियो सँ महत्त्वपूर्ण आ पवित्र किछु आओर छैक । मौन सँ आन्तरिक प्रकाश बढ़ैत छैक, हृदयक सामीप्य बढ़ैत छैक । मौन मनुष्य केँ ओकर मानवीय कायाक सीमासँ मुक्त कए स्वर्गक सीमा दिस प्रवृत्त करैत छैक । मनुष्य मौनक बलेँ शरीरक एहि बंधन सँ मुक्त होइत अछि आ ओकरा भान होइत छैक जे ई संसार ओकर आदिवास नहि, मात्र निर्वासनक स्थान थिकैक ।

मूक सलमा जखन हमरा दिस देखलक तँ ओकर आँखि मे ओकर हृदयक रहस्य हमरा समक्ष स्वत: प्रकट भए आएल छल । किन्तु, किछु कालक पश्चात् ओ बाजलि– "चलू ने, फुलबाड़ी मे चली आ गाछक नीचाँ बैसि कए पर्वतश्रेणीक पाछाँ सँ उगैत चन्द्रमाक गति केँ निहारी ।" हम आज्ञाकारी जकाँ ओकर पाछाँ–पाछाँ विदा भए गेलहुँ ।

"अन्हार मे तँ किछु देखऽ मे नहि अबैत छैक; ने गाछ, ने फूल, आ ने फुलबाड़ी । किएक नहि ताधरि एतहि बैसी, जाबत चन्द्रमा उगि कए सम्पूर्ण उद्यान केँ आलोकित नहि कए दैत छथि !" हम कहलिऐक ।

"अन्हार फूल आ फुलबाड़ी केँ अदृश्य कए सकैछ, किन्तु हमरा सभक बीचक प्रेम केँ नुकएबा मे ओ असमर्थ अछि ।" —बाहर दिस तकैत विचित्र भावप्रवणता सँ ओ बाजलि । हम ओकर कथनक प्रत्येक शब्द केँ बेर–बेर जोखैत विचारमग्न रहलहुँ ।

हमर मौन सँ ओकरा मे जेना किछु पश्चात्तापक भाव आबि गेलैक । हमरा लागल, जेना ओ अपन नजरिक जादू सँ अपन शब्द केँ हमर हृदय सँ बाहर घीचि लेबाक प्रयास मे रत हो ! किन्तु, ओ आँखि ! हमर हृदयक अन्तस्तल सँ बेर–बेर अबैत ओहि मधुर शब्दक प्रतिध्वनि हमर हृदयमे शाश्वत शिलालेख बनि चुकल छल ।

कोनो क्षणमात्रेक विचार वा उत्ताप विश्वक सकल सौंदर्य आ महिमाक जनक सिद्ध होइछ । आजुक संसारक सब वस्तुक अस्तित्व अतीत मे कोनो पुरुष वा स्त्रीक मन मे मात्र एक विचारक रूप मे रहल होएतैक । सहस्रो मनुष्यक बीच कोनो एक मनुष्यक विचार समाज मे ओहि अनेक भयानक विद्रोहक जन्म देने छैक जे जँ असीम रक्तपातक कारण बनल छैक तँ आजुक मनुष्यक स्वतंत्रताक सोपान सेहो । विराट साम्राज्य केँ विनाशक मुँह देखबएवला भयानक

युद्ध कोनो मनुष्यक मनक विचार मात्र छलैक । मानवताक धारा परिवर्तित करएवला अनेक मार्ग कोनो एके मनीषीक— जे प्रतिभाक बलें अपन समाज सँ भिन्न छल— चिंतनक द्वारा प्रवर्तित भेल छैक । पिरामिडक निर्माण, इस्लाम धर्मक उत्कर्ष आ एलेक्जेन्ड्रियाक पुस्तकालयक ध्वंस सबटा एके-एके व्यक्तिक विचारक परिणाम छलैक ।

मनुष्यक मनक कोनो एकेटा विचार ओकरा प्रसिद्धिक उत्कर्ष पर पहुँचा सकैत छैक वा बंदीगृहक मुँह देखा सकैत छैक । एकटा नवयौवनाक प्रेमसिक्त दृष्टि अहाँ कें सृष्टिक सर्वाधिक प्रसन्न मनुष्य बना सकैत अछि । कोनो दोसर व्यक्तिक मुँह सँ कहल मात्र एकेटा शब्द अहाँक जीवन कें नेहाल वा अनाथ कए सकैत अछि ।

सलमाक ओहि रातिक शब्द हमरा भूत आ भविष्यक विस्तृत समुद्रक बीच आनि कए छोड़ि देलक । ओकर वैह शब्द जे हमरा यौवनक ऐकान्तिकता सँ मुक्ति दिऔने छल, हमरा जीवनक ओहि रंगमंच पर आनि कए ठाढ़ कए देलक जतए जीवन आ मृत्यु अपन नाटक रचैत अछि ।

फुलबाड़ीक हवा चमेलीक मादक सुगंधि सँ भरि आएल छलैक । हम सब बेंच पर बैसि कए सुप्त प्रकृतिक श्वास-प्रश्वासक ध्वनि सुनि रहल छलहुँ आ उन्मुक्त आकाश हमर सभक प्रेमक नाटक देखि रहल छल ।

लगले 'सनीन' पर्वतक पाछाँ सँ अबैत चन्द्रमाक ज्योत्स्ना मे सम्पूर्ण वातावरण आलोकित भए उठल । घाटीक बीच मे बसल ग्राम-समूह सहसा जींवत भए उठल, आ चन्द्रमाक आलोक मे सम्पूर्ण लेबनानक सौंदर्य मुखरित भए उठलैक ।

पश्चात्य कवि वृन्दक नजरि मे दाउद, सुलेमान आ पैगम्बर

सभक मृत्युक बाद लेबनान ओहने विस्मृत ऐतिहासिक स्थल मे परिवर्त्तित भए गेल छैक जेना आदम आ हव्वाक अभिशप्त भेलाक बाद अदनक उद्यान भए गेल छलैक । ओहि कवि सभक दृष्टि मे लेबनान शब्द स्वयं एक कविता थिक । पर्वतमालाक समीप मे बसल आ 'सेडार'क सुगंधि पूरित लेबनान हुनका सभकेँ मात्र एतुक्का संगमरमरी आ ताम्रीय उन्नत मंदिर सभक स्मरण करबैत छनि, उन्मुक्त चरैत मृग-यूथक स्मरण करबैत छनि ।

ओहि राति हमहूँ लेबनान केँ एकटा कविक आँखि सँ देखने रही । वास्तव मे मनुष्यक अपन मनोभाव कोनो वस्तुक छवि केँ ओकर मन:स्थितिक अनुकूल कए दैत छैक । तेँ, सौंदर्य आओर जादू कोनो वस्तु वा व्यक्तिविशेष मे नहि, हमर-अहाँक आत्मा मे होइछ ।

सलमाक शरीर, ओकर अंग-प्रत्यंग पर बरिसैत चन्द्रिका ओहि राति ओकरा जेना कोनो पूजक मूर्त्तिकार द्वारा बनाओल सौंदर्य आ प्रेमक देवी 'एश्थर'क संगमरमरी प्रतिमा मे परिवर्त्तित कए देने छलैक । हम मंत्रमुग्ध छलहुँ । किन्तु, हमर मौन जेना ओकरा असह्य बुझि पड़लैक आ ओ बाजलि- "अहाँ एना चुप किएक छी ?" हम सुस्थिर होइत एकाएक ओकर सौम्य छवि दिस नजरि उठौलहुँ । हमर मौन मुखर भए उठल आ हम कहलिऐक- "हम सब जखन एहि बाग मे आएल छलहुँ, की हमर कहब अहाँ तखनहि नहि सुनलहुँ ? जे आत्मा फूलक कनफुसकी आ नीरवताक संगीत सुनि सकैछ से हमर अंतरात्माक करुण पुकार सुनबा मे कथमपि असमर्थ नहि भए सकैछ ।"

ओ अपन मुँह केँ अपन हाथ सँ झँपैत अवरुद्ध स्वर मे बाजलि- "हँ, हम अहाँक स्वर सुनने छलहुँ । रातिक नीरवता आ दिनक कोलाहलक हृदय सँ अबैत अहाँक शब्द हम सुनने रही ।"

ओहि समय हमरा सलमाक अतिरिक्त कथूक भान नहि छल । हमर अस्तित्वो प्राय: हमर प्रज्ञाक सीमा सँ बाहर छल । हम कहलिऐक– "सलमा, हमहूँ अहाँक पुकार सुनने छलहुँ । हमरो सम्पूर्ण वातावरण केँ अनुप्राणित करैत आ विश्वकेँ कँपबैत एकटा मधुर संगीत कर्णगोचर भेल छल ।"

ई शब्द सुनिते ओ आँखि मुनि लेलक आ ओकर ठोर पर आनन्द आ उदासी मिश्रित एकटा स्मित हास चमकि उठलैक । ओ बाजलि–"हमरा बुझि पड़ैत अछि स्वर्गहु सँ ऊँच, सागरो सँ गंभीर, जीवन–मृत्यु आ समयो सँ बेसी आश्चर्यजनक किछु आओर छैक एहि भूमि पर । आइ हमरा ओहि वस्तुक दर्शन भेल अछि जे अद्यावधि हमर चेतनाक परिधि सँ बाहर छल ।"

ओहि समय मे हम कहैत छी, सलमा हमरा मित्र सँ बेसी प्रेमी, सहोदरा सँ बेसी समीप आ प्रेमिकासँ बेसी प्रियतर लागलि छलि । ओ हमर विचार, स्वप्न आ संवेदनाक चरम सीमाक मूर्त्त रूप बनि चुकलि छलि तखन ।

मिथ्या थिक ई धारणा जे प्रेम सहचारिता आ सम्मेलने टा सँ जगैत छैक । प्रेम तँ दू आत्माक बीचक सामीप्य–सम्बन्धक फल थिकैक । ई जँ क्षणमात्र मे नहि जनमतैक तँ वर्षो आ जीवन–पर्यन्तो मे नहि पनपि सकैत छैक ।

पुन: सलमा सिनाइ पर्वतक ऊपर क्षितिज दिस तकैत बाजलि– 'काल्हि धरि अहाँ हमरा ले' मात्र भाइ रही, जकर संग हम पिताक समीप बैसैत छलहुँ । किन्तु आइ ? आइ हमरा एहि सँ किछु भिन्न, एहिसँ किछु विशेष मधुर सम्बन्धक अनुभव भए रहल अछि, प्रेम आ भय दुहूक सम्मिश्रण हमर हृदय मे सुख आ अवसाद दुहूक संचार कए रहल अछि ।"

हम कहलिऐक- "ई भाव जे हमर आ अहाँक ह्रदय मे भयक संचार कए रहल अछि, ह्रदयकेँ उद्वेलित कए रहल अछि, से प्रकृतिक ओ देन थिक जकर बलेँ चन्द्रमा पृथ्वीक परिधि पर नचैत छथि आ सूर्य ईश्वरक परिक्रमा करैत छथि ।"

एही बीच पता नहि कखन ओ अपन माथ हमर कान्ह पर राखि कए हमर केश केँ अपन आँगुर सँ फेरए लागलि । अकस्मात् ओकर मुँह अप्रतिम आभामय भए उठलैक, आँखिक कोर पर नोरक बुन्न मोती जकाँ चमकि उठलैक आ ओ बाजलि- "हमर सभक प्रेमकेँ के मानत ? के मानत जे एहि क्षण मे हम सब एक-दोसराक प्रति संदेहक बाधा पर विजय पाबि लेने छी ? के मानत जे ई 'निशान'क मास जे हमरा सभक मिलनक ऋतु सिद्ध भेल अछि, वैह हमरा सभकेँ एहि पवित्र जीवन मे आबद्ध होएबा सँ रोकि देलक अछि ?"

एहू क्षण मे ओकर सुखद हाथ हमर माथ पर छलैक । वैह सुन्दर हाथ, जकर समक्ष प्रबल राजमुकुट वा गरिमामय पुष्पहार केँ अस्वीकार करब हम श्रेयस्कर बुझितहुँ ।

सलमाक गप्प सँ हम विह्वल भए गेलहुँ आ कहलिऐक- "लोक हमरा सभक प्रेम केँ नहि मानत, कारण लोक केँ ई बुझल नहि छैक जे प्रेमक फूलकेँ पनपबा ले' प्रकृति आ ऋतुक योगदान नहि चाहिऐक । मुदा, की ओ 'निशान'हिक मास नहि छल जे हमरा सभक बीच आकर्षणक सूत्र बन्हलक आ पवित्र जीवनक डोरी केँ कटबाक काज सेहो कएलक ? की ओ दैवीए प्रभाव नहि छल जकर बलेँ हमर सभक ह्रदय एक-दोसराक समीप आबि सर्वदाक लेल एक-दोसराक बंदी बनि गेल ? मनुष्य-जीवनक आरंभ मायक गर्भ मे आ समाप्ति चिते मे नहि भए जाइत छैक । चन्द्रमाक आभा आ झिलमिलाइत तारा समूह सँ सुसज्जित एहि ब्रह्माण्ड केँ प्रेमी आत्मा

आ दिव्य शक्ति कहियो छोड़ि कए नहि जाइत छैक । ओ अनादिकाल धरि एत्तहि निवास करैत अछि ।"

किछु कालक पश्चात् जखन ओ अपन आँगुर केँ हमर केश-गुच्छ सँ बाहर कएलक तँ हमर रोम-रोम मे रातिक पवनक संग मिश्रित विद्युत्-धाराक कंपन जकाँ अद्भुत संवेदनाक संचार भए गेल छल । किन्तु, हमहूँ एकटा विश्वासी पूजक जकाँ, जे बलिबेदी केँ चूमि कए आशीर्वादक कामना करैत अछि, सलमाक सुन्दर हाथ केँ पकड़ि कए ओकरा अपन प्रज्वलित ओष्ठ सँ एकटा प्रबल चुम्बन देलिऐक जकर स्मरण मात्र आइ हमर हृदय केँ द्रवित कए दैत अछि, अपन माधुर्य सँ हमर आत्माक सम्पूर्ण अस्तित्व केँ जगा दैत अछि ।

एक घंटा, जकर एक-एक पल साल-साल भरिक तुल्य छल, बीति गेल । रात्रिक नीरवता, चन्द्रमाक शीतल किरण, फूल आ वृक्षक बीच हमरा सभकेँ प्रेमक सत्यताक अतिरिक्त आओर कथूक भान नहि छल, यावत हठात् दौड़ैत घोड़ा आ भगैत बग्घीक ध्वनि हमरा सभक कान मे नहि पड़ल ।

बग्घी सँ उतरि कए इफानी जखन उद्यान लग अएलाह तँ हुनक शरीर पर अस्सी मोन पानि पड़ल छलनि । सलमाक लग आबि ओकर कान्ह पर दुनू हाथ राखि ओकरा सँ किछु कहबा ले' जहाँ ओ अपन नजरि उठौलनि कि हुनक दुनू गाल पर गंगा-यमुनाक अधैर्य धारा जकाँ अजस्र अश्रुक बाढ़ि टघरि अएलनि । अवरुद्ध कण्ठ सँ ओ बजलाह- "हमर प्रिय पुत्री, शीघ्रे तोँ हमरा सँ बिछुड़ि जएबेँ ! एकटा दोसर व्यक्ति तोरा एहि एकान्त घरक वातावरण सँ दूर विस्तृत संसार मे लए जएतैक । एहि फुलबाड़ीक भूमि तोहर पयर क स्पर्श ले' लालायित रहतौक आ तोहर ई वृद्ध पिता तोरा ले' अदना भए जएतौक । सब किछु समाप्त भए गेल छैक । भगवान तोरा सुखी रखथुन ।"

ई गप्प सुनिते सलमाक आकृतिक आभा एकाएक मिझा गेलैक । ओकर आँखि पथरा गेलैक, जेना ओ आसन्न मृत्युक पूर्वाभास सँ ग्रस्त भए गेलि हो ! ओ बिद्ध पक्षी जकाँ अवरुद्ध कण्ठ सँ बाजलि– "अहाँ की कहि रहल छी ? स्पष्ट भए कहू । हमरा कतए पठा रहल छी ?" ओ प्रश्नसूचक दृष्टि सँ पिता दिस तकैत रहलि आ किछु क्षणक पश्चात् पुनः बाजलि– "हम बुझि गेलहुँ । हमरा किछु बुझबा मे भाङठ नहि अछि । पादरी अहाँ सँ हमरा मांगि लेने अछि । आ ओ एहि पाँखिविहीन पक्षी ले' पिजरा तैयार कए रखने अछि । की अहूँक यैह विचार अछि ?"

इफानी उत्तर मे गंभीर निःश्वास छोड़लनि । ओ दुलार सँ सलमाक हाथ पकड़ि ओकरा घरक भीतर लए गेलाह । हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ विचारक झंझावात मे कँपैत पात जकाँ ठाढ़ रहलहुँ। किन्तु, किछु कालक पश्चात् स्थितिक गम्भीरता केँ देखैत हम वृद्धक अभिवादन कए, सलमा— अपन आँखिक पुतरी— केँ एक बेर भरि आँखि देखि घर सँ बाहर भए अपना ओहि ठामक बाट धएलहुँ ।

हम अधिक सँ अधिक फुलबाड़ीक कोन लग पहुँचल होएब कि वृद्धक स्वर हमर कान मे पड़ल । हम आपस हुनका लग गेलहुँ । क्षमा-याचनाक मुद्रामे वृद्ध बजलाह- "पुत्र, हम अहाँक एहि साँझकेँ बेरबाद कए देलहुँ । किन्तु हमर ई घर जखन सुन्न भए जाएत, हम एकसर आ हताश भए जाएब तँ अहाँ हमरा सँ भेट करए अवश्य आएब । युवक केँ वृद्धक संग नहि भए सकैछ, जेना भोर आ साँझ मीलि नहि सकैछ । किन्तु, अहाँक अएलासँ हमरा अपन ओहि यौवनक स्मृति भए अबैत अछि जे हम अहाँक पिताक संग व्यतीत कएने छी । हमरा अहाँ जीवनक गप्प सुनाएब, कारण हम आब जीवन सँ विदा होमए जा रहल छी । की अहाँ सलमाक गेलाक बाद हमर भेट नहि करब ?''

ई गप्प कहैत–कहैत फेर हुनक आँखि भरि अएलनि । हमरो लागल जेना वात्सल्य आ पीड़ाक ई मिश्रण हमरो हृदय केँ बेधि देने छल । ओ जखन नजरि उठा कए देखलनि जे हमरो आँखि मे नोर उमड़ि आएल तँ ओ कहलनि– "बाउ, आब अहाँ जाउ ।"

वृद्धावस्थाक नोर यौवनक नोर सँ बेसी प्रबल होइत छैक, कारण ई वृद्धक जर्जर शरीर मे जीवनक अवशिष्ट अंश होइछ । युवकक नोर गुलाबक पात पर टघरल ओसक बुन्न जकाँ होइछ, किन्तु वृद्धक नोर पतझड़ मे वृक्षसँ खसैत निर्बल पात जकाँ होइत छैक जे जाड़ अबिते बसातक संगहि भूमिसात भए जाइछ ।

इफानीक घर सँ चल अएलाक पछातिओ सलमाक शब्द हमर कान मे गुँजैत रहल, आ ओकर सौंदर्यक छाया हमरा पछुऔने आएल ।

इफानीक घर सँ हमर ओ प्रस्थान स्वर्ग सँ 'आदम'क प्रस्थान छल, किन्तु हमरा संग हमर 'हव्वा' नहि छलीह । ओहि राति, जहिया हमर पुनर्जन्म भेल छल, हमरा लागल, पहिले–पहिल हमरा मृत्युओक दर्शन भेल छल ।

एहिना सूर्य उगैत छथि जे अपन ऊर्जा सँ समस्त जीवकेँ अनुप्राणितो करैत छथि आ अपन ऊष्मा सँ सृष्टिक विनाशो कए दैत छथि ।

छठम अध्याय

रातिक अंधकार मे चोरा-नुका कए मनुष्य जे कोनो क्रिया करैत अछि, आइ-ने-काल्हि ओ प्रकाश मे आबिए जाइत छैक । कोनो गोपनीय वार्ता सर्वदाक लेल गुप्त नहि रहि सकैत छैक । आ तेँ, उफानी आ पादरीक बीचक गप्प गुप्त नहि रहि सकलनि । आ, ओहि रातिक अन्हार मे जे गुप्त मंत्रणा भेल रहैक, तकर भनक हमरो लागि गेल छल ।

पादरी आ इफानीक बीचक ओहि रातिक वार्ता कोनो गरीब, विधवा वा अनाथ बच्चाक सहायताक लेल नहि भेल रहनि, अपितु पादरी ओहि राति सलमाक मङनी अपन भातिज मंसूरक संग करएबा लेल इफानी केँ बजौने रहथिन ।

सलमा इफानीक एकमात्र संतान छलीह । पादरी अपन भातिज लेल सलमाक चुनाव ओकर रूप आ गुणक लोभेँ नहि कएने छलाह । जँ हुनक मोन मे कोनो वस्तुक लोभ छलनि तँ ओ छलैक इफानीक विपुल ऐश्वर्य, जकर बलेँ पादरी बुलो गालिब अपन भातिजकेँ सुखी-सम्पन्न बना सकैत छलाह ।

प्राच्य-प्रदेशक धर्मगुरु सब केँ अपन प्रभुत्व सँ ताधरि सन्तोष नहि होइत छनि, जाधरि ओ सब अपन परिवारक सब

सदस्यकेँ प्रतिष्ठित आ एकबाली नहि बना लैत छथि । राजाक राज्यक अधिकारी ओकर जेठ सन्तान होइत छैक, किन्तु धर्मगुरुक महानता संक्रामक रोग जकाँ ओकर बंधु-बांधव आ भाइ-भातिज धरि पहुचने बिना नहि बचैत छैक । तेँ हमर विचारेँ क्रिस्तान बिशप, मुसल्मान इमाम आ ब्राह्मण पण्डा ओहि समुद्री अठ-सूढ़ा जकाँ होइछ जे अपन अनेको सूढ़ आ मुँहक बीच शिकार केँ जकड़ि कए ओकर रक्त केँ ताधरि चुसैत रहि जाइत छैक, जाधरि ओ निष्प्राण नहि भए जाइत छैक । जखन बुलो गालिब इफानी सँ हुनक पुत्रीक हाथ मांगि लेलथिन तँ इफानीक आँखि स्वत: भरि आएल छलनि, कारण हुनका अपन एकमात्र संतान सँ फराक होएब स्वीकार्य नहि छलनि । किन्तु, ओ किछु बाजि नहि सकलाह । एहन स्थिति मे कोन पिताक हृदय द्रवित नहि भए जएतैक जे अपन एकमात्र पुत्रीकेँ एना हृदय सँ लगा कए पोसने हो !

माय-बाप केँ बेटाक विवाह सँ जतबे प्रसन्नता होइत छैक, बेटीक विवाह सँ ओतबे दु:खो । कारण, बेटाक विवाह सँ परिवार मे एकटा नव सदस्य अबैत छैक आ बेटीक विवाह सँ परिवारक एकटा पुरान सदस्य बाँकी सब सँ बिछुड़ि जाइत छैक ।

फेरिस इफानी अपन इच्छाक विरुद्ध पादरीक आग्रह केँ मानि लेने छलाह, यद्यपि हुनका ई बुझबा मे कोनो भाङठ नहि छलनि जे पादरीक भातिज महान दुष्ट आ भ्रष्ट मनुष्य छलैक ।

लेबनान मे कोनो व्यक्ति पादरीक विरुद्ध नहि जा सकैछ, हुनक कृपाक बिना अपन प्रतिष्ठा नहि बचा सकैछ, ककरो प्रतिष्ठा बिनु पादरीक अनुकरण कएने अक्षुण्ण नहि रहि सकैछ । किन्तु, बिनु आहत भेने हाथ तरुआरिक धार केँ पकड़ि नहि सकैछ ।

जँ इफानी पादरीक इच्छाक प्रतिरोध करितथि तँ यत्र-कुत्र लोक सलमाक चरित्रक निंदा करितैक, ओकर विरुद्ध खिस्सा गढ़ितैक ।

कारण, जे अंगूर सियार नहि खा सकैछ ओकरा ओ खट्टा कहि दुसि दैत छैक ।

भाग्यक दासी सलमा एकटा क्रीतदासी मात्र रहि गेलि छलि । सलमा जकर आत्मा प्रेमक पाँखिपर चंद्रिका मे नहाइत नील गगनक सुगंधित आ मादक पवन मे उन्मुक्त उड़ब शुरू कएने छलि, सहसा भूमिसात भए गेलि ।

कतेको ठाम माता-पिताक ऐश्वर्य एहिना संतानक कष्टक कारण बनैत छैक, माता-पिताक कोषागार संतानक कारागार बनि जाइत छैक, जतए ओकर आत्मा मात्र अन्हार मे औनएबा ले' बाध्य भए जाइत छैक । सर्वशक्तिमान दीनार (मध्य-पूर्वक मुद्राक एक प्रकार) जकर मनुष्य दिन-राति पूजा करैत अछि, ओकर आत्मा कें राक्षस जकाँ प्रताड़ित कए मारि दैत छैक ।

सलमाक दुर्भाग्यक कारण सेहो ओकर पिताक ऐश्वर्य छलैक । जँ ओकर पिता सम्पत्तिशाली नहि होइतथि सँ सलमा आइयो सुखी रहैत ।

एक सप्ताह बीति गेलैक । सलमाक प्रेम हमर मनोरंजनक एकमात्र आधार छल । ओकरे प्रेमक बलें हमरा जीवन आ प्रकृतिक रहस्यक अर्थ लागल छल । ओकरे प्रेम हमर आनन्दक सोपान छल । ईर्ष्यामुक्त नैसर्गिक प्रेम सर्वदा आत्माक लेल सुखद आ निरापद होइत छैक । ई दू आत्माक बीच एकटा विशिष्ट लगाओ थिकैक जे आत्मा कें संतुष्टि सँ भरि दैत छैक । स्नेहक प्राप्ति ले' ई एकटा सुखद भूख थिकैक जकर संतुष्टि हृदय कें पूर्णता प्रदान करैत छैक । ई एकटा कोमल भावना थिकैक जे हृदय कें बिनु उद्वेलित कएने ओहि

मे आशाक संचार करैत छैक, पृथ्वीकेँ स्वर्ग मे बदलि कए जीवन केँ मधुर आ सुन्दर स्वप्न मे परिवर्तित कए दैत छैक ।

जखन-जखन उषा-काल मे हमर नजरि लहलहाइत हरियर खेत पर पड़ल, हमरा लागल जेना एहि अनादि सृष्टि मे प्रकृति जागि उठल हो ! समुद्रक लहरि मे हमरा जीवनक शाश्वत संगीत कर्णगोचर भेल छल । बाट चलैत पथिक आ श्रमिकक निरंतर आवागमन मे हमरा जीवनक सौंदर्य आ जीवंत मानवताक दर्शन भेल छल । किन्तु ओ दिन चलायमान मेघ जकाँ उड़ि गेल आ हमरा लग दु:खद स्मृतिक अतिरिक्त शेष किछु नहि बाँचल । जे आँखि वसंतक सौंदर्य आ जगैत प्रकृतिक दृश्य देखबाक अभ्यस्त छल तकर आगाँ बिहाड़िक विभीषिका आ शिशिरक कम्पनक अतिरिक्त किछु अवशिष्ट नहि छलैक । हमर जे कान आनन्दपूर्वक समुद्रक लहरिक संगीत सुनने छल, ओकरा आइ कछेरक ऊपर माथ पटकैत ज्वारि आ सनसनाइत बसातक ध्वनिक अतिरिक्त आओर कथूक भान नहि छलैक । आत्मा, जकरा मनुष्यक अदम्य साहस आ सृष्टिक अन्यतम उत्कर्षक दर्शन भेल छलैक, आइ असफलता आ निराशाक भाव सँ पीड़ित भए गेल छल । प्रेमक ओहि विगत दिन सँ बेसी सुन्दर आ उदासीक ओहि भयानक राति सँ बेसी कष्टकर आओर कथूक अद्यावधि ज्ञान नहि भेल अछि ।

हमरा जखन रहि नहि भेल तँ सप्ताहान्त मे हम पुन: इफानीक ओतए गेलहुँ—ओहि मंदिर मे जकर निर्माण सौंदर्यक प्रयास आ प्रेमक आशीष सँ भेल छलैक, जतए आत्मा नत भए प्रार्थना आ पूजा कए सकैत छल । जखन हम हुनक फुलबाड़ी लग पहुँचलहुँ तँ हमरा लागल, एक विचित्र प्रकारक अलौकिक शक्ति एहि संघर्ष आ कष्टक संसार सँ दूर कत्तहु हमरा खीचि रहल छल । घरक समीप पहुँचला पर हम सलमा केँ चमेलीक गाछ तर ओही

बेंच पर बैसलि देखलिऐक जतए एक सप्ताह पूर्व ओहि राति- जे ईश्वर हमर सुख आ दु:ख दुनूक आरंभ ले' निर्धारित कएने छलाह- हम सब संग-संग बैसल रही । हमरा लागल जेना स्वर्गक सब रहस्य हमर आँखिक समक्ष अनावृत भए गेल हो !

हमरा अबैत ओ देखलक, किन्तु मूर्तिवत् बैसलि रहलि । ओकरा प्राय: सम्बुद्धिक बलेँ हमर आगमनक भान भए गेल छलैक । जखन हम चुपचाप ओकरा लग जाकए बैसि गेलहुँ तँ ओ क्षण भरि ले' हमरा दिस देखि कए पुन: मुँह घुमा लेलक आ आकाश दिस ताकए लागलि । क्षण भरिक नीरवताक पश्चात् ओ घुमि कए पुन: हमरा दिस तकलक आ सत्वर अपन कँपैत हाथ सँ हमर हाथ केँ जोर सँ पकड़ैत दु:खी स्वर मे बाजलि- "प्रियतम, हमर आँखि मे देखू, हमर मुँह देखू, अहाँ जे जानए चाहैत छी, आ हमर वाणी जे कहबा मे असमर्थ अछि, तकर उत्तर भेटि जाएत ।"

हम किछु क्षण धरि ओकरा दिस तकैत रहलहुँ । हमरा लागल, ओकर आँखिमे, जे किछुए दिन पूर्व धरि ओकर ठोर जकाँ मुखर छलैक, नील गगन मे उड़ैत-गबैत कोकिलाक पाँखि जकाँ चंचल छलैक, एकटा गहन वेदना आ उदासी प्रतिविम्बित भए आएल छलैक । ओकर गुलाब सन मुखमंडल श्रीविहीन भए गेल छलैक । ओकर ठोर झड़ैत गुलाबक पत्ती जकाँ शुष्क आ रसहीन भए गेल छलैक । ओकर शंख-सदृश ग्रीवा जेना चिंता सँ भारी भेल मस्तकक भार वहन करबामे असमर्थ भए नत भए गेल छलैक ।

सलमाक मुँह परक ई सब परिवर्त्तन हमरा चन्द्रमाक ऊपर सँ जाइत मेघ मात्र जकाँ लागल छल, जे ओकर सौंदर्य केँ आओर बढ़ा दैत छैक । मनुष्यक आकृति पर झलकैत आन्तरिक वेदनाक केहनो छाप ओकर सौंदर्य केँ आओर बढ़ा दैत छैक । किन्तु ओ आनन जे अपन मौन मात्र सँ सब किछु नहि कहि सकैछ, कथमपि सुन्दर नहि

भए सकैछ । चाहे ओकर अवयव कतबो सुडौल किएक नहि होइक ! जँ सुरापात्र पारदर्शी नहि हो तँ सुराक रंग मनुष्यक ठोर केँ कोना लोभओतैक ?

ओहि दिन साँझ मे सलमा जीवनक सुख आ दु:ख दुनूक रसक सम्मिश्रण सँ पूर्ण सुरापात्र जकाँ लागलि छलि । सलमा ओहि राति ओहि नारीक प्रतिरूप छलि जे पति–सेवाक बोझ उठओलाक पश्चाते माय–बापक घर सँ प्रस्थान करैत अछि, जे सासुक कठोरता आ दासता केँ बिनु स्वीकारने मायक आँचरक आश्रय केँ नहि छोड़ि सकैछ ।

हम सलमा दिस एकटक तकैत रहलहुँ । ओकर दु:खी हृदयक करुण ध्वनि सुनैत–सुनैत सृष्टिक अस्तित्वक हमर ज्ञान लुप्त भए गेल छल । जँ कथूक प्रज्ञा हमरा छल तँ मात्र सलमाक कँपैत हाथक शीतल स्पर्शक आ हमरा दिस स्थिर तकैत ओकर दूटा विशाल आँखि मे घनीभूत पीड़ाक ।

अकस्मात् सलमाक स्वर सुनि कए हमर ध्यान भंग भए गेल । ओ कहैत छलि– “प्रियतम, भविष्यक सम्बन्ध मे किछु कहू । हमर पिता हमर भावी जीवन–संगी सँ भेट करए गेल छथि । हमर पिता, जनिका ईश्वर हमर जनक बनौने छथिन, हमर आगत जीवनक स्वामी सँ भेट कए हमर विवाह स्थिर करताह । केहन शुभ घड़ी !”

“पछिला हप्ता एहि समय जखन भाग्य हमर जीवन–कथाक पहिल शब्द पादरी क प्रासाद मे लीखि रहल छल, प्रेम हमर आत्मा केँ पहिले बेर एही चमेलीक गाछक छाहरिमे आलिङ्गनबद्ध कएने छल । आइ जखन हमर पिता आ हमर भावी पति हमर विवाहक दिन स्थिर कए रहल छथि तँ अहाँक आत्मा केँ हम एकटा पिपासु पक्षी जकाँ ओहि जलस्रोतक चारूकात मरड़ाइत देखि रहल छी, जकर पहरेदारी एकटा वुभुक्षित विषधर कए रहल छैक । ओह ! ई केहन रहस्यमय राति अछि !”

ई सुनिकऽ हमरा लागल जेना निराशाक दुष्ट प्रेत हमरा सभक प्रेम केँ शैशवे मे कवलित कए लेबा ले' उद्यत हो ! हम कहलिऐक– "ई पक्षी एहि जलस्रोत पर ताधरि मरड़ाइत रहत जाधरि ओ पियास सँ जीवन–विहीन भए भूमिसात नहि भए जाइछ, वुभुक्षित विषधरक भक्ष्य नहि बनि जाइछ ।"

ओ बाजलि– "नहि, नहि, एहि बुलबुल केँ ताधरि जीबैत आ गबैत रहए पड़तैक जाधरि वसंत बीति नहि जएतैक, पृथ्वीक अस्तित्व समाप्त नहि भए जएतैक, आ सम्पूर्ण विश्व मे अंधकारक साम्राज्य नहि पसरि जएतैक । ई स्वर मूक नहि भए सकैछ, कारण ओ हमर हृदय मे जीवनक संचार करैत अछि । ओकर पाँखि भग्न नहि होएतैक, कारण ओकर गति हमर हृदय सँ शोकक कारी–कारी मेघ केँ उड़ा दैत अछि ।"

हम मद्धिम स्वरेँ कहलिऐक– ''सलमा ! हमर प्रियतमा ! पियास सँ ई पक्षी परिश्रान्त भए जाएत, आ भय ओकरा मारि देतैक ।"

कँपैत ठोर सँ ओ लगले बाजलि– "आत्माक पिपासा भौतिक सुरा सँ बेसी मधुर होइछ । आत्माक अस्तित्वक रक्षा शारीरिक सुरक्षा सँ बेसी प्रिय होइछ । किन्तु, हे हमर प्रियतम ! हम आइ एकटा एहन जीवनक दुआरि पर ठाढ़ि छी, जकर हमरा किछु ज्ञान नहि अछि । हम पतनक भय सँ ग्रस्त आन्हर जकाँ ठेकानि–ठेकानि कऽ चलि रहलि छी । हमर पिताक ऐश्वर्य हमरा क्रीत–दासी बना देने अछि । हम अपन भावी पति केँ ने जनैत छिएनि आ ने प्रेम करैत छिएनि । किन्तु, हमरा हुनका सँ प्रेम करब सीखए पड़त । हम अपन आज्ञाकारिता आ सेवा सँ हुनका प्रसन्न रखबाक प्रयास करबनि । हम हुनका पर ओ सब–किछु निछाउर कए देबनि जे एकटा अबला सबल पुरुष केँ दए सकैत छैक । किन्तु प्रियतम ! अहाँ एखनहुँ अपन

जीवनक बिहान मे छी । अहाँक आगाँ एखनहुँ जीवनक विस्तृत मार्ग पर फूल बिछाओल पड़ल अछि । अपन हृदयक प्रकाशक बलेँ अहाँ एखनहुँ अपन जीवन-यात्रा स्वतंत्रता सँ पूर्ण कए सकैत छी । अहाँ सोचबा, करबा आ बजबा ले' स्वतंत्र छी । पुरुष छी, तेँ अहाँ जीवनक ललाट पर अपन नाम लिखि सकैत छी । अहाँ स्वतंत्र भए जीवि सकैत छी, कारण अहाँक पिताक ऐश्वर्य अहाँ केँ धनक बाजार मे खरीद-बिक्रीक लेल प्रस्तुत नहि कए सकैछ । जहाँ स्वतंत्रता सँ अपन पत्नीक चयन कए सकैत छी आ ओकरा अपन घर मे अनबा सँ पूर्व अपन हृदय मे स्थापित कए ओकरा संग अपन मोनक गप्पक आदान-प्रदान कए सकैत छी ।"

किछु क्षणक मौनक पश्चात् सलमा पुनः बाजब आरम्भ कएलक- "किन्तु, की जीवन हमरा सभ केँ मात्र एही ले' पृथक कए रहल अछि जे अहाँ अपन पुरुषार्थक पताका फहराबी आ हम नारीक कर्त्तव्य पूर्ण कए सकी ?

की मात्र एही टा ले' घाटी बुलबुलक स्वर केँ गीड़ि लैत छैक, बसात गुलाबक पत्ती केँ पत्ती सँ भिन्न कए दैत छैक, सुरापात्र मनुक्खक पएरक तर चूरल जाइछ ? की चन्द्रमाक आभा मे चमेलीक गाछ तरक हमर सभक मिलन, जतए हमर सभक आत्मा एकाकार भए गेल छल, निरर्थक भए गेल ? की तारा केँ तोड़ि अनबाक प्रयास मे हमर सभक पाँखि थाकि गेल, तेँ हम सब रसातल मे उतरि रहल छी ?

की प्रेम ओहि समय मे सुप्त छल, जखन ओ हमरा सभ लग आएल छल, आ जखन ओकर आँखि खुजलैक तँ क्रुद्ध भए हमरा सभकेँ दण्डित करबाक निर्णय कए लेलक ? की हमर सभक आत्मा रात्रिक मंद समीर केँ बिहाड़ि मे परिवर्तित कए देलकैक जे हमरा सभ केँ छिन्न-भिन्न कए धूरा जकाँ उड़ा कए घाटीक तलहटी मे फेकि देलक ?

ने हम सब दैवी इच्छाक अवज्ञा कएने छी आ ने वर्जित फलक आस्वाद कएने छी, तखन किएक हमरा सभकेँ स्वर्ग सँ निर्वासित कएल जा रहल अछि ? हम सब तँ ने कहियो विद्रोह वा ओकर षड़्यत्र कएने रही तखन हम सब नरक मे किएक खसि रहल छी ? नहि, नहि, जाहि क्षण मे हमर सभक मिलन भेल छल ओ अनेको शताब्दी सँ पैघ छल ।

जे प्रकाश हमरा सभक आत्माकेँ आलोकित कए गेल अछि, ओ अन्हारक सत्ता सँ प्रबल आ मुक्त छैक । जँ झंझावात सँ उधियाइत समुद्रक छाती पर हम सब बिछुड़ि रहल छी तँ शान्त किनार पर हमर सभक मिलन अवश्य होएत, जँ ई जीवन हमरा सभ केँ मारि देत तँ मृत्युक ओहि पर हमर सभक मिलन अवश्य होएत ।

एकटा नारीक हृदयकेँ समय आ ऋतु परिवर्तित नहि कए सकैछ; ओ मरिओ कए विनष्ट नहि भए सकैछ । नारीक हृदय युद्ध-भूमि मे परिवर्तित ओहि भूमि जकाँ होइछ, जतए जखन गाछ-वृक्ष उखड़ि जाइछ, घास जरि जाइछ, भूमि रक्त प्लावित भए जाइछ, ओकर पग-पग नरमुंड आ अस्थि सँ पाटि जाइछ, तथापि ओ तेना शान्त आ नि:शब्द बनल रहैछ जेना ओतए किछु भेले नहि हो, कारण वसंत आ पतझड़ एहिना क्रमश: अबैत आ चल जाइत छैक ।

किन्तु, प्रियतम ! आब हमरा लोकनि की करब ? हम सब कोना बिछुड़ि जाएब ! फेर कोना भेट होएत ? की प्रेम हमरा सब ले' अनभिज्ञ अतिथि छल जे साँझ मे आएल आ भोरे मे छोड़ि कए चल गेल ? आ, की ई प्रेम हमर सभक एकटा स्वप्न छल जे निद्राभंग होइते विलीन भए गेल ?

की एहि सप्ताह केँ मात्र खुमारीक एक घड़ी कहबैक जकर निशाँ आब टुटि जाएत ? हे हमर प्रियतम ! नजरि उठाउ, हमरा अपन मुँह देखए दिअए । किछु बाजू, हमरा अपन बोली सुनए दिअए । की

एहि बिहाड़िक बाद जाहि मे हमर सभक प्रेमक नाओ डुबि गेल, अहाँ केँ हम मोन पड़ब ? की रात्रिक नीरवता मे हमर पाँखिक ध्वनि सुनब ? की हमर आहि अहाँ धरि पहुँचत ? की गोधूलिक झलफल मे अबैत आ उषाक लाली मे जाइत हमर परिछाहीक भान अहाँ केँ होएत ?

अहाँ हमर आँखिक ज्योति रही, हमर कानक मधुर संगीत रही, हमर आत्माक पाँखि रही; कहू आब हमरा ले' अहाँ की छी ? हमरा लेल अहाँ की रहब ?"

ई शब्द सुनिते हमर हृदय द्रवित भए गेल आ हम कहलिऐक- "अहाँ जाहि रूप मे हमरा चाहब, हम अहाँ लेल ओही रूप मे प्रस्तुत रहब, प्रियतमे !"

ओ बाजलि- ''अहाँक हृदय मे हम ओहने प्रिय होबए चाहैत छी जेना कोनो कवि केँ अपन दु:खद चिन्तन प्रिय होइत छैक । अहाँ हमरा ओहिना मोन राखू जेना पियासल पथिक केँ जलाशयक शान्त जल मे जल पीबाकाल प्रतिविम्बित अपन छवि मोन रहैत छैक । अहाँ हमरा ओहि जननी जकाँ मोन राखू जकरा जनमिते मरिजाइतो अपन शिशुक मुँह नहि बिसरैत छैक । हम अहाँक स्मृति मे ओहिना बसए चाहैत छी, जेना एकटा दयालु राजा ओहि बंदीक स्मरण करैछ जे ओकर क्षमादानक खबरि सँ पूर्वहि प्राण त्यागि दैछ । अहाँ हमर संगी बनल रहू । अहाँ हमर पिताक, जनिक जीवन मे हमर चल गेलाक पछाति केओ सांत्वना देबए वला नहि होएतनि, भेट अवश्य करैत रहबनि, कारण हम शीघ्रे एहि घर सँ चल जाएब आ सर्वदा लेल आन बनि जाएब ।"

हम कहलिऐक-"हम अहाँक इच्छा अवश्य पूर्ण करब । हमर आत्मा सर्वदा अहाँक आत्माक संगी रहत । अहाँक सौंदर्य सर्वदा हमर हृदय मे निवास करत । अहाँक सब दु:ख केँ हम अपन

हृदय मे समाहित कए लेब । सलमा ! हम अहाँ केँ ओहिना मानब जेना वन-उपवन केँ वसंत-ऋतु प्रिय होइत छैक । सूर्यक किरण मे विकसित होइत फूल जकाँ हम अहाँक हृदय मे निवास करब । गामक गिरिजाघरक घंटा जखन-जखन प्रतिध्वनित होएतैक, ओकर संग समवेत स्वर मे हम अहाँक नामक गीत गाएब । अहाँक हृदयक वाणी हमरा ओतबे प्रिय होएत जतेक ज्वारिक संघर्ष सँ समुद्रक कछेर केँ सहानुभूति होइत छैक । हम अहाँ केँ ओही भाव सँ स्मरण करैत रहब जेना विदेश मे भेतिआएल केओ पथिक अपन स्वदेशक स्मरण करैछ, वुभुक्षित भोजक स्वप्न देखैत अछि, निर्वासित राजा अपन गौरवमय अतीतक स्मरण करैछ, बंदी स्वतंत्रताक कामना करैछ । अहाँकेँ हम ओही प्रेम सँ देखब जाहि प्रेम सँ किसान अपन खरिहान मे राखल जजातिक बोझ केँ देखैत अछि, चरबाह मीठ पानिक झरना आ हरिअर घासक चरौंतक स्मरण करैछ ।"

सलमा तन्मयता सँ हमर गप्प केँ सुनैत रहलि आ फेर बाजलि- "ई सत्य काल्हि स्वप्न भए जाएत, प्रेतात्मा जकाँ अदृश्य भए जाएत । किन्तु, प्रेम ककर आलिङ्गनमे संतोष पाओत ? की जलस्रोतक कल्पना मात्र सँ पिपासुक तृष्णा शान्त भए सकैछ ?"

हम कहलिऐक- "काल्हि भाग्य अहाँ केँ एकटा एहन परिवार मे स्थापित कए देत जतए शान्ति विराजमान छैक । किन्तु, काल्हि भाग्य हमरा संघर्ष आ युद्धक संसार मे बलपूर्वक धकेलि देत । काल्हि अहाँ ओहि व्यक्तिक सहभागिनी बनए जा रहलि छी जकरा प्रारब्ध अहाँक सौंदर्य आ गुणक कारण सर्वाधिक भाग्यशाली व्यक्ति बना देने छैक । किन्तु, हम पीड़ा आ भयक जिनगीक बंदी बनि जाएब । अहाँ जीवनक दुआरि मे आ हम मृत्युक प्रदेशमे प्रवेश करब । नव परिवार मे अहाँक आदरपूर्वक स्वागत कएल जाएत, किन्तु हम एकाकी भए जाएब । तथापि, मृत्युक घाटी मे प्रेमक

मूर्तिक स्थापना कए ओत्तहि हम ओकर पूजा करैत रहब । प्रेम हमर एकमात्र सांत्वना रहत, हम ओकरे परिधान पहिरि ओकरे रंगमे रंगि जाएब ।

भोर मे जगा कए प्रेम हमरा सुदूर हरिअर खेत मे लए जाएत । दुपहरिया मे प्रेमहिक साहचर्य मे हम वृक्षपुंजक छाहरि मे, चिड़ै-चुनमुनीक बीच, रौदक उत्ताप सँ त्राण पाएब । साँझ मे डूबैत सूर्यक विदाइक प्रकृतिक गीत आ रातिक कारी-कारी मेघ मे सर्वत्र हमरा प्रेमेक दर्शन होएत । राति मे प्रेमेक आलिङ्गन मे विश्राम कए हम ओहि स्वप्नक संसार मे विचरण करब जतए प्रेमी आ कविक हृदय विचरैत छैक ।

वसंत ऋतुमे प्रेमेक संग-संग फुलबाड़ी मे विचरैत हम शिशिर ऋतुक अवशिष्ट ओसकेँ 'लिली' फूलक कटोरी मे आस्वादन करब; ग्रीष्म मे चन्द्रमा आ तारागण केँ निहारैत हम सब घासक शय्यापर पुआरक गेड़ुआ माथ तर लऽ कए संग-संग नील गगनक नीचाँ पड़ल रहब ।

शरद मे हमर प्रीति आ हम अंगूरक खेत मे जाएब जतए अंगूरक लतिका सब सँ लोक ओकर स्वर्ण-आभूषण— ओकर फल— केँ लूटि कए ओकरा श्रीविहीन करैत होएतैक । ओहि काल उड़ैत पक्षी समूह हमरा सभक ऊपर छाहरि प्रदान करत ।

जाड़क मास मे आगि लग संग-संग बैसि कए हम सब सुदूर देशक आ अतीतक खीसा-पिहानी सूनब । युवावस्थामे प्रेम हमर शिक्षक बनत, प्रौढ़ावस्था मे हमर सहारा होएत, आ वृद्धावस्थाक आनन्द । ई प्रेम, सलमा, हमर प्राणक संगहि जाएत, कारण मृत्युक बाद ईश्वर हमरा सभ केँ पुनः एकाकार कए देताह ।"

ई शब्द हमर हृदयक अन्तस्तल सँ आगिक ओहि ज्वाला

जकाँ धधकि उठल छल जे क्षण भरि मे छाउर भए जाइत अछि ।

सलमाक धैर्यक बान्ह टुटि गेल छलैक । ओ कानि रहलि छलि, जेना ओकर आँखि ठोर मे परिवर्तित भए नोरहि सँ उत्तर दए रहल हो !

जकरा प्रेम अपन पाँखि नहि प्रदान कएने छैक ओ उड़ि कए ओहि अदृश्य संसारक दर्शन नहि कए सकैछ जतए हमर आ सलमाक आत्मा ओहि कटु–मधु क्षण मे एकाकार भए गेल छल । प्रेमक आह्वान सुनबा मे ओ सब असमर्थ छथि जनिका प्रेम अपन अनुगामी नहि बनौने छनि । ई कथा हुनका सब ले' नहि छनि । हुनका सभकेँ एहि कथाक छायावादी अर्थ नहि लागि सकैत छनि, कारण ओहि भावकेँ शब्द मे नहि कहल जा सकैछ, कागत पर लिखल नहि जा सकैछ । किन्तु, ओ कोन मनुक्ख थिक जे कहिओ प्रेमरसक आस्वाद नहि कएने हो ! एहन कोन आत्मा भए सकैछ जे ओहि मंदिरक बेदी लग नतमस्तक नहि भए जाएत, जकर प्रत्येक तन्तु नर–नारीक पवित्र प्रेम सँ निर्मित छैक ! एहन कोन फूल होएत जकर ठोर पर भोरुका ओसक एक बिन्दु नहि खसल होएतैक ! ओकरा कोन घर कहबैक जे समुद्र सँ आलिङ्गन करबा सँ पूर्वहि भोतिआ गेल हो ?

सलमा एकाएक ताराच्छादित आकाश दिस नजरि उठौलक । ओकर दुनू हाथ प्रार्थनाक मुद्रा मे उठि गेलैक, ओकर आँखि ज्योतिर्मय भए उठलैक आ ओकर ठोर पर किछु कम्पन भेलैक । ओकर पीअर आकृति पर उदासी, प्रताड़ना, निराशा आ पीड़ाक परिछाँही स्पष्ट छलैक । ओ बाजि उठलि—

"हे ईश्वर, नारी कोन अपराध कएने छलि जाहि सँ अहाँ आहत भेल छी ? कोन अपराधक लेल ओ अनादिकाल सँ भर्त्सनाक पात्र बनलि अछि ? हे प्रभु, हम अबला छी, हमरा किएक पीड़ित

कए रहल छी ? अहाँ महान् आ सर्वशक्तिमान छी । हम तँ अहाँक चरण मे लेटाइत एकटा क्षुद्र जीव मात्र छी । अहाँ अपन पएर सँ हमरा किएक मसलि रहल छी ? अहाँ झंझावात छी आ हम धूलिकण । अहाँ हमरा एहि सर्द भूमि पर किएक पटकि देने छी ? अहाँ सबल छी, हम निस्सहाय, तखन हमरा सँ अहाँ किएक लड़ि रहल छी ? अहाँ तँ विचारवान छी आ हम सशंकित, तखन किएक हमरा विनाशक मुँह देखा रहल छी ? अहाँ प्रेमक योग दए नारीक सृष्टि कएने छी तखन प्रेमेक माध्यम सँ किएक ओकरा बेरबाद कए रहल छी ? एक हाथ सँ उठा कए अहाँ दोसर हाथ सँ ओकरा पाताल मे पटकि दैत छिऐक, यद्यपि एहि अकृपाक कारण सँ ओ अनभिज्ञ अछि । ओकर श्वास मे अहाँ जीवन भरि दैत छिऐक आ ओकर हृदय मे मृत्युक बीआ रोपि दैत छिऐक । ओकरा खुशीक मार्ग देखा कए अहाँ कष्टक मार्गपर प्रवृत्त कए दैत छिऐक । ओकर मुँह मे अहाँ खुशीक गीत दए कए ओकर ठोर केँ उदासी सँ सीबि दैत छिऐक, ओकर जीह केँ काटि लैत छिऐक । अहाँ अपन आंगुर सँ ओकर घाव पर मलहम लगबैत छिऐक, किन्तु अपन हाथ सँ ओकर खुशी केँ पीड़ाक भय सँ बान्हि दैत छिऐक । ओकर प्रत्येक खुशी आ आनन्दक बिछाओनक पाछाँ अहाँ भय आ बाधाक देबाल ठाढ़ कए दैत छिऐक । अपन इच्छाशक्ति सँ अहाँ ओकर हृदय मे अनुराग जगबैत छिऐक, किन्तु ओहि अनुरागक संग लाज सेहो पनपि अबैत छैक । अपन कृपा सँ अहाँ नारी मे सौंदर्यक बीजारोपरण करैत छिऐक, किन्तु सौंदर्यक प्रति ओकर प्रेम भयानक दुर्भिक्ष साबित होइत छैक । अश्रु सँ पवित्र कए ओकर जीवन केँ अहाँ अश्रुएक धार मे प्रवाहित कए दैत छिऐक । जीवनक कटोरी मे मृत्यु आ मुत्युक कटोरी मे अहाँ ओकरा जीवन पिया दैत छिऐक । हे भगवान ! प्रेमक ज्योति सँ अहाँ हमर आँखि खोलने रही आ ओही ज्योतिक अभाव मे अहाँ हमरा आन्हर बना देने छी । अहाँ अपन ठोर

सँ हमरा चुमि तँ लेलहुँ, किन्तु अपन प्रबल हाथ सँ प्रताड़ित सेहो कए देलहुँ। अहाँ हमर हृदयमे उज्जर गुलाबक फूल रोपि कए ओकरा काँट सँ बेढ़ि देलहुँ। हमर वर्तमान केँ अहाँ एक नवयुवकक आत्मा सँ, जे हमरा प्रेम करैत अछि, जोड़ि देलहुँ, किन्तु हमर जीवनक सूत्र एकटा अनजानक संग बान्हि देलहुँ । तेँ हे ईश्वर, हमरा शक्ति दिअऽ जाहि सँ हम एहि संघर्ष मे सत्य आ निष्ठा सँ जीवन पर्यन्त लड़ि सकी । अहाँक इच्छा सर्वोपरि अछि, हे ईश्वर !"

ई कहि ओ चुप भए गेलि । ओ परिश्रान्त आ उदास भए भूमि दिस ताकए लागलि । ओकर झुकल मस्तक, लगैत छलैक, जेना बिहाड़ि वृक्षक कोनो शाखाकेँ मचोड़ि कए शुष्क आ विनष्ट भए जएबा ले' भूमि पर पटकि देने होइक !

हम ओकर शीतल हाथकेँ पकड़ि कए चुमि लेलिऐक । किन्तु, हमरा लागल जेना ओकरा सँ बेसी सांत्वनाक आवश्यकता हमरे छल । तेँ निःशब्द हम, अपन भाग्यक गति केँ हेरैत रहलहुँ, अपन हृदयक स्पन्दन केँ सुनैत रहलहुँ ।

निःशब्दता भीषण प्रताड़ना होइछ । हमहूँ सब, भूकम्पक प्रकोप मे भूमिसात आ अजस्र बालु-माटिक राशि सँ दबल संगमरमरी भवन जकाँ, निःशब्द बैसल रहलहुँ । हम सब एक-दोसरा सँ किछु सुनबाक प्रयास नहि कएलहुँ, कारण हमर सभक हृदयक तंतु जे अत्यंत दुर्बल भए गेल छल, भए सकैत छल, श्वासोक झोंकी सँ टुटि जाइत ।

आधा राति बीति चुकल छलैक । सनीनक पहाड़ीक पाछाँ अर्द्धचन्द्रक उदय भए चुकल छलैक, किन्तु तारागणक बीच ओहो ताबूत मे राखल कोनो मृतक मुख जकाँ मोमबत्तीक मद्धिम ज्योति-माला सँ घेरल लगैत छलाह । आ लेबनान एकटा एहन वृद्ध जकाँ लागि रहल छल जकर डाँड़ वयसक बोझ सँ झुकि गेल होइक, आ जे

निद्राक अभाव मे भोरक प्रतीक्षा कए रहल हो ! ओ ओहि राजा जकाँ लगैत छल जे भूमिसात प्रासादक बीच अपन सिंहासनक छाउर पर बैसल हो !

वृक्ष, पर्वत आ नदी समय आ ऋतुक अनुकूल अपन स्वरूप केँ परिवर्त्तित कए लैत अछि, जेना मनुष्य अनुभव आ मनोभावक अनुकूल बदलि जाइछ । जे वृक्ष दिनक प्रकाश मे नव-बधू जकाँ प्रतीत होइछ वैह रातिक अन्हार मे उठैत धुँआक स्वरूप धए लैछ । जे चट्टान दिन मे दुर्भेद्य बुझि पड़ैछ सैह राति मे धरतीक बिछाओन आ आकाशक आवरणक बीच दयनीय प्रतीत होइछ । जे सरिता भोर मे कल-कल करैत आ चानी जकाँ चमकैत बहैत अछि वैह साँझ भेलापर शिशु-विहीन जननीक अश्रुधाराक रूप धए लैछ । एक सप्ताह पूर्व, पूर्ण चन्द्रमाक राति मे, जखन हमर सभक आत्मा प्रसन्न छल, यैह लेबनान, जे ओहि राति दुःखी आ एकाकी लागि रहल छल, समुन्नत बुझि पड़ैत छल ।

हम सब दुनू गोटे उठि कए एक-दोसरा सँ बिदा लेलहुँ । किन्तु, प्रेम आ निराशा, दू टा प्रेत जकाँ हमरा सभक मध्य ठाढ़ छल; एकटा अपन आंगुर हमरा सभक गरदनि पर राखि, अट्टहास करैत, ओकरा दबएबा पर उद्यत; आ दोसर, अश्रुप्लावित ।

हम लग आबि कए सलमाक हाथ चुमि लेलिऐक । सलमा सेहो अपन अधरोष्ठ सँ हमर माथ केँ चुमि लेलक । तकर पश्चात् ओ हठात् बेंच पर बैसि गेल, आँखि मुनि लेलक आ बाजलि- ''हे ईश्वर, दया करू, हमर टूटल पाँखि केँ जोड़ि दिअऽ ।"

जखन हम ओहि फुलबाड़ी सँ विदा भेलहुँ तँ लागल जेना हमर प्रज्ञा भोथ भए गेल हो, जेना झीलक सतह कुहेसक आवरण सँ झँपा गेल हो !

वृक्षक सुन्दरता, चन्द्रमाक आभा, प्रगाढ़ नीरवता आ हमरा सभक समीपक सब–किछु हमरा विद्रूप लागि रहल छल । ओ ज्योति जे हमरा सौंदर्य आ सृष्टिक आश्चर्य सँ परिचय करौने छल, भयानक ज्वाला मे परिवर्तित भए हमर हृदय कें दागि रहल छल । हमर कान मे बजैत शाश्वत संगीत सिंहहुक गर्जन सँ बेसी भयानक कोलाहल मे परिवर्त्तित भए चुकल छल ।

अपन कोठली मे आपस आबि हम ब्याधा द्वारा आहत कएल गेल पक्षी जकाँ बिछाओन पर खसि पड़लहुँ आ हमरो मुँह सँ सलमाक वैह शब्द निकसि पड़ल— हे स्वामी ! हे ईश्वर ! दया करू, हमर टूटल पाँखि कें जोड़ि दिअऽ ।

सातम अध्याय

विवाह आइ–काल्हि माय–बाप आ युवक वर्गक बीच एकटा मखौल मात्र बनि कए रहि गेल छैक, जाहि मे बेसी ठाम माय–बाप हारैत अछि आ युवक वर्ग जीतैत अछि । नारी एक उपभोग्य सामग्री मात्र मानल जाइछ, जे एक परिवार सँ दोसर परिवारक बीच कीनल आ बेचल जाइछ । किन्तु, किछुए दिनक पश्चात् जखन ओकर सौंदर्यक रंग मलिन भऽ जाइत छैक तँ ओ पुरान–भग्न कुरसी–टेबुल–खाट–चौकी जकाँ घरक कोनो कोन मे नड़ा देल जाइछ ।

आधुनिक सभ्यता नारी कें निश्चिते किछु बुद्धिमती बना देलकैक अछि, किन्तु पुरुषक स्वार्थी स्वभावक कारणें ओकर उत्पीड़न आओरो बढ़ि गेल छैक । ताहि दिनक नारी प्रसन्नचित्ता अर्द्धाङ्गिनी होइत छलि, किन्तु आइ ओ दयनीय बंदिनी भरि रहि गेल अछि । पहिने ओ प्रकाश मे आँखि मुनि कए चलैत छलि, किन्तु आइ ओ आँखि खोलि कए अन्हार दिस प्रवृत्त भए रहलि अछि । अज्ञानता मे ओ सुन्दर लगैत छलि, सादगी मे गुणी लगैत छलि, आ ओकर दौर्बल्ये ओकर शक्तिक स्रोत छलैक । आइ ओ अपन छल–छद्म मे कुरूपा भए गेलि अछि, ज्ञान ओकरा उत्थर आ हृदयहीन बना देने छैक । की एहन दिन कहिओ होएतैक जहिया नारी

मे सौंदर्य आ ज्ञान, गुण आ प्रतिभा, आत्माक शक्ति आ शारीरिक दौर्बल्य एके संग मूर्त्त भए उठतैक ?

हमर ई धारणा अछि, आध्यात्मिक विकास मानव-जीवनक विधान छैक, किन्तु पूर्णताक दिशा मे ओकर गति अत्यन्त मन्थर आ पीड़ाजनक छैक । जँ कोनो नारी कोनो एक दिशा मे प्रगति करैछ तँ संगहि दोसर मे ओकर ह्रास भए जाइछ । कारण, पर्वत शृंखलाक मार्ग चोर-डकैत आ हिंसक जन्तु सँ खाली नहि होइछ ।

हमर सभक ई पीढ़ी निद्रा आ जागृतिक स्थितिक बीच भकुआएल जकाँ पड़ल अछि । एकर हाथ मे भूत केर अवगुण आ भविष्यक आशा दुनू छैक । किन्तु, प्रत्येक नगर मे एकटा एहन नारी निश्चय भेटति जे भविष्यक प्रतीक अछि ।

बेरूतक एहि नगर मे, सलमा करामी सेहो प्राच्य-देशक भावी नारीक प्रतीक छलि । किन्तु, ओहो आरो लोक सब जकाँ, जे अपन समय सँ आगाँ जीबैत अछि, वर्त्तमानक शिकार भए गेलि, गाछ सँ टूटल फूल जकाँ निस्सहाय, ओहो नदीक धारक संग बहि कए पराजितक समूह मे मीलि गेलि ।

मंसूर बे'गालिब आ सलमा विवाहक पछाति रस-बेरूत इलाकाक अपन सुन्दर भवन मे रहैत छलाह । किन्तु, फेरिस इफानी करामी अपन भकोभंड घर-आंगन आ बाड़ी-फुलबाड़ीक बीच ओहिना एकाकी भए गेलाह जेना भेड़ी-बकरीक समूहो मे भेड़िहर-चरबाह एकसरे बनल रहैत अछि ।

विवाहक मधुमय अवधि आनन्द मे बीति गेल, किन्तु विगत दुःखद दिनक पीड़ा, संग्राम-भूमि पर युद्धक बाद अवशिष्ट मृत मानवक अवशेष जकाँ, मेटा नहि सकलैक । प्राच्य-देशक वैवाहिक समारोहक विशिष्टता युवक-युवतीक मन केँ तँ मोहि लैत छैक,

किन्तु ओकर परिणति अवनतिओक गर्त्त मे भए सकैत छैक ।

ओकर उल्लास बालुका राशि पर पड़ल तरबाक चेन्ह जकाँ क्षणभंगुर होइछ, जे ज्वारिक अबिते अस्तित्वहीन भए जाइछ ।

वसंत, ग्रीष्म आ शरद एकाएकी बीति गेल, किन्तु दिनानुदिन सलमाक प्रति हमर अनुराग ताधरि बढ़िते चल गेल, यावत ओ मूक उपासना मे परिवर्त्तित नहि भए गेल । सलमाक प्रति हमर भावना अनाथ शिशुक अपन स्वर्गीया जननीक प्रति अनुरागक तुल्य छल । हमर उद्‌वेग एहन उदासी मे परिवर्त्तित भए गेल छल जे अपन अतिरिक्त आन कथूक अनुभूति सँ शून्य छल । हमर एहि मन:स्थिति मे हमर आँखिक नोर तँ सुखा गेल, किन्तु ओकर स्थान एकटा विचित्र उद्वेग लए लेने छलैक जे प्रतिपल हमर हृदय सँ संजीवन-रस केँ चूसि रहल छल । हमर करुण आहि निरन्तर प्रार्थना मे परिवर्त्तित भए चुकल छल, जाहि मे सदिखन सलमा आ ओकर पतिक सुख आ ओकर पिताक शान्तिक कामना निहित छलैक ।

किन्तु, हमर सब आशा आ आराधना व्यर्थ छल, कारण सलमाक दु:ख अन्तर्जात छलैक आ मृत्युक अतिरिक्त ओकर कोनो ओषधि नहि छलैक ।

मंसूर बे'गालिब एहन व्यक्ति छलाह जनिक जीवन मे सकल ऐश्वर्य अनायासे आएल छलनि, तथापि लोभ हुनक पाछाँ नहि छोड़ने छलनि, सन्तोष सँ भेट नहि छलनि । सलमाक विवाहक पश्चात् ओ सदिखन ओकर पिताक मृत्युएक कामना मे लागल रहलाह, जाहि सँ शीघ्रातिशीघ्र हुनक अवशिष्ट सम्पत्तिक अधिकारी बनि सकथि ।

मंसूर बे'क चरित्र ठीक हुनक पित्ती जकाँ छलनि । जँ दुनू मे किछु अंतर छलनि तँ यैह जे बुलो गालिब अपन धार्मिक जामाक तरे-तर गुप्त रूपेँ अपन अभिलषित वस्तुक कामना करैत आ पबैत

छलाह, किन्तु मंसूर बे' अभिलषित वस्तु कें खुलेआम प्राप्त करैत छलाह । पादरी भोर सँ साँझ धरिक समय गिरिजाघर मे विधवा, अनाथ आ सोझमतिया कें ठकबा मे लगबैत छलाह, किन्तु मंसूर बे' अपन समय कें यौन-पिपासा शान्त करबामे झोंकैत छलाह । पादरी प्रत्येक रविकें जे उपदेश आ प्रवचन दैत छलाह, तकर अनुसरण ओ अपन निजी जीवन मे कहिओ नहि कएलनि । धर्म सँ बेसी हुनक अभिरुचि स्थानीय राजनीति मे छलनि । तें मंसूर बे' अपन पित्तीक प्रतिष्ठा आ प्रभावक मूल्य जनता सँ असुलैत छलाह ।

पादरी बुलो गालिब चोर जकाँ रातिक अन्हार मे अपन गतिविधि कें झँपने रहैत छलाह, किन्तु हुनक भातिज उद्दण्ड जकाँ दिनहु मे छाती तानि कए चलैत छलाह । किन्तु सत्य तँ इएह छैक जे प्राच्य-देशक जनता एहने कसाइ आ भक्षक मे विश्वास कए लैत अछि, जे अपन धूर्त्तता सँ ओकर देश कें नष्ट कए दैत छैक आ ओकर परिजन-पुरजन कें निर्ममतापूर्वक मसलि दैत छैक ।

हम एहि पोथीक प्रस्तुत पृष्ठक दुरुपयोग निर्धन देशक एहि कपटी मनुष्य सभक चर्चा मे किएक कए रहल छी, जखन कि एकर सदुपयोग एकटा नारीक टूटल हृदयक कथाक लेल भए सकैत छैक ? एकटा अबलाक, जकर जीवन कालक गालमे समा चुकल छैक, स्मृतिमे नोर बहएबाक बदला हम पीड़ित मानवता ले' किएक नोर बहा रहल छी ?

किन्तु, प्रिय पाठक गण ! की अहाँ कें नहि होइत अछि, एहन नारी ओहि राष्ट्रक प्रतीक थिक जकरा पंडा-पुजारी आ प्रशासक मीलि कए पीड़ित कए देने छैक ? की अहाँ कें नहि होइत अछि, नारीक असफल प्रेम, जे ओकर जीवन हरि लैत छैक, सम्पूर्ण मानवता कें उदास कए दैत छैक ?

नारी राष्ट्रक तहिना जीवन थिक जेना ज्योति दिबारीक । जँ

दीप मे भक्ष्य नहि होइक तँ की ओकर प्रकाश मद्धिम नहि भए जएतैक ?

शरद गाछ-वृक्ष केँ नग्न करैत बीति गेल छल आ शिशिर कनैत-कलपैत आबि चुकल छल । हम लगातार बेरूते मे रही । अपन स्वप्नक, जे हमर आत्मा केँ आकाशक उँचाइ सँ पातालक गर्भ मे धकेलि दैत छल, अतिरिक्त आन कोनो हमर संगी नहि छल। उदास मोन केँ एकान्ते मे शान्ति भेटैत छैक, जेना शर-बिद्ध हरिण अपन झुंड छोड़ि कए ताधरि गुफा-कंदराक एकान्त शरण मे जाकए रहैत अछि जाधरि ओकर घाव भरि नहि जाइत छैक किंवा ओ मरि नहि जाइत अछि।

एक दिन हमरा खबरि भेटल जे फेरिस इफानी अस्वस्थ छथि । हम सत्वर एकटा एकान्त मार्ग धऽकऽ हुनक निवास पर पहुँचलहुँ।

ओतए गेला पर देखलहुँ जे रुग्ण आ दुर्बल इफानी बिछाओन पर पड़ल छथि । हुनक धँसल आ ज्योतिहीन आँखि दू टा अन्हार घाटी जकाँ लागि रहल छल, जाहिमे व्यथाक छाया प्रेत जकाँ बौआए रहल छल । हुनक जीवंत मुँह परक निरंतर हँसीक स्थान कष्ट आ व्यथाक घटा लए लेने छलनि । हुनक हाथक हाड़ बिहाड़ि मे कँपैत गाछक तन्नुक ठारि जकाँ लगैत छल । हम हुनका लग जाकए जखन अभिवादनक पश्चात् हाल-चाल पुछलियनि तँ हुनक कँपैत ठोर पर क्षण मात्र ले' एकटा क्षीण मुस्की झलकि अएलनि आ ओ मद्धिम स्वरेँ बजलाह- "बाउ, अहाँ ओहि कोठली मे जाकए सलमा केँ बुझबिऔक आ हमरा लग लेने अबिऔक ।"

हुनक कोठली सँ सटले दोसर कोठली मे गेला पर देखलहुँ जे सलमा गेडुआ मे मुँह गाड़ि कए कानि रहलि छलि । हम आस्ते सँ ओकरा सम्बोधित कएलिऐक । ओ अकचका कए डेरा जकाँ

गेलि, जेना ओकर दुःस्वप्न अचानक भंग भए गेल होइक । ओ अविश्वास सँ हमरा दिस देखए लागलि, जेना ओकरा एहि विषय मे सन्देह होइक जे ओकर समक्ष कोनो मनुष्य ठाढ़ छलैक अथवा प्रेत । क्षण भरिक मौनक पश्चात् नोर पोछैत सलमा बाजलि– "देखिऔक, समय कोना बदलि गेल छैक ! समय कोना हमर सभक जीवन–धारा केँ मोड़ि कए बेरबाद कए देलक ! एही ठाम वसंत हमरा सभ केँ प्रेमक सूत्र मे बन्हने रहए आ एतहि हम सब मृत्युक समक्ष ठाढ़ छी । ओ वसंत केहन सुषमा–सम्पन्न रहैक आ ई शिशिर केहन कठोर छैक !" क्षण भरिक मौन जेना ओकरा भूतक ओहि संसार मे सपनाक पाँखि पर उड़ा कए लए गेल रहैक जतए कोनो क्षण मे हम सब प्रेमक मदिराक खुमारी मे मस्त भए गेल रही ।

ई बजैत–बजैत ओ एक बेर पुनः अपन आँखिकेँ दुनू हाथ सँ झाँपि लेलक जेना ओ अपन समक्ष ठाढ़ अतीतक परिछाँही केँ देखए नहि चाहैत हो । हम अपन हाथ ओकर माथ पर रखैत कहलिऐक— "सलमा, आउ । हमरा सभकेँ बिहाड़ि सँ पूर्व बलिष्ठ स्तम्भ जकाँ अटल होएब आवश्यक अछि । एक बहादुर सिपाही जकाँ हमरा सभकेँ शत्रुक सामना करबाक चाही । एहि युद्ध मे यदि हम सब पराजित भेलहुँ तँ परम गति केँ प्राप्त कए अमर भए जाएब, आ जँ विजयी भेलहुँ तँ वीरोचित सम्मानक संग जीवनक उपभोग करब । कठिनताक सामना करब हारि कए बैसि जएबा सँ श्रेयस्कर होइछ । ओ फनिगा जे ज्योतिक परिक्रमा करैत जरि जाइछ, गुफाक अंधकारक शरण मे जिनगी बिता देबएवला कीड़ी सँ बेसी प्रशंसनीय थिक । आउ, हम सब अग्रसर होइ, जाहि सँ एहि मार्गक रोड़ा–पाथर आ काँट–कूसक बीच साप–कीड़ा आ आस्थि, नरमुंड केँ देखि कए यात्रा सँ पूर्वहि मनोबल टुटि नहि जाए । जँ एहि यात्रा मे हम सब भयाक्रान्त भए बीचहि मे हारि बैसब तँ लोकोपहासक पात्र बनब आ यदि एहि पर्वतीय यात्रा केँ वीरतापूर्वक पूर्ण करब तँ

हमरा सभक विजयोल्लासक गीत मे स्वर्गीय आत्मा सभ सेहो संग देताह । नोर पोछि कए अपन मुँह पर सँ उदासी हँटाउ आ मोन प्रसन्न करू । चली, हम सब अहाँक वृद्ध पिता लग चलि कए बैसी, कारण अहाँक प्रसन्नते पर हुनक जीवन निर्भर करैत छनि, मात्र अहीँक मुस्कान हुनक रोगक निवारण कए सकैत छनि ।"

सलमा स्नेह-सिक्त नजरि सँ हमरा दिस तकैत बाजलि- "अहाँ हमरा धैर्य दिअएबाक प्रयास कए रहल छी, जखन अहाँ केँ स्वयं ओकर आवश्यकता अछि । स्वयं वुभुक्षित ककर भूख शान्त कए सकैत छैक ? एकटा रोगी दोसर केँ ओ ओषधि कोना दए सकैत छैक, जकर ओकरा स्वयं घोर आवश्यकता छैक ?

ओ मूड़ी झुकौनहि उठलि आ हमरा संगहि वृद्धक कोठली दिस बिदा भए हुनक बिछाओन लग जा कए बैसि गेलि । सलमा मुस्कएबाक निरर्थक प्रयास कएलक आ इफानी सेहो लक्ष्य कएलनि जे हुनक स्थिति सुधरि रहल छनि, किन्तु केओ एक-दोसराक उदासी, एक-दोसराक आहि सँ अपरिचित नहि छल । दुनूक हृदय एक-दोसराक मूक वेदनाक अनुभव कए रहल छल । सत्यत: पिताक हृदय, पुत्रीक स्थिति देखि कए, द्रवित भए रहल छलनि । दूटा पवित्र आत्मा, एकटा महाप्रयाणक लेल चल:प्रचल: आ दोसर पीड़ा सँ आक्रान्त, एक-दोसर सँ प्रेम आ मृत्युक मध्य आलिङ्गनबद्ध । हम अपन दु:खी आत्माक संग मूक दर्शक बनल रहलहुँ ।

तीनू गोटे जकर सम्मेलन भाग्येक बलेँ भेल छल, आइ भाग्येक हाथेँ मोचरल जा रहल छलहुँ— बाढ़िक विभीषिका सँ जर्ज्जर भेल भवन जकाँ वृद्ध, निदर्य हाँसूक धार सँ काटल गेल फूलक कली सन नारी, आ तुषारपातक भार सँ दबल निस्सहाय अँकुरा जकाँ एकटा युवक; तीनू गोटे भाग्यक हाथक खेलौना बनि गेल छलहुँ ।

फेरिस इफानी आस्ते सँ उठि अपन हाथ बढ़बैत, अतिशय प्रेम आ वात्सल्य सँ बजलाह– "हमर दुलारि बेटी, हमर हाथ पकड़ि ले।"

सलमा सत्वर हुनक हाथ पकड़ि लेलकनि ।

ओ आगाँ बजलाह– "हम जीवनक पर्याप्त उपभोग कएलहुँ अछि । हम जीवन–नाटकक प्रत्येक अंकक निस्पृह भाव सँ अनुभव करैत आएल छी । तोहर माय जखन तोँ केवल तीने वर्षक रहहिँ तँ तोरा अमूल्य निधि जकाँ हमर अंक मे छोड़ि कए चल गेलथुन । हमर तोरा बढ़ैत–फुलाइत देखलिऔक अछि । तोहर मुँह पर तोहर मायक आकृतिक आभास ओहिना प्रतिविम्बित छौक जेना पोखरिक शान्त जल मे आकाशक तारा समूह प्रतिविम्बित होइछ । तोहर स्वभाव, तेजस्विता आ सौंदर्य, एते धरि जे बजबा आ चलबाक ढंग सेहो माये जकाँ छौक । सर्वदा तोँ हमर जीवनक एकमात्र आशा बनल रहलेँ, कारण तोँ बात–विचार आ क्रिया मे अपन मायेक प्रतिरूप साबित भेल छेँ । आब हम वृद्ध भए गेल छी । हमर विश्रामस्थल आब मात्र मृत्युएक कोमल पाँखिक बीच अछि । तोँ सुखी रह । हम बहुत जीबि लेलहुँ । आब तोरा शिशु सँ नारी मे परिवर्तित होइत सेहो देखि लेलिऔक । खुशी रह, कारण मृत्युक उपरान्त हम तोरे आत्मा मे निवास करबौक ।

हमर अवसान जँ आइक बदला काल्हि वा परसूओ होअए तँ ओहि सँ किछु अन्तर नहि होएतैक, कारण हमर जीवन शरद–ऋतुक पात जकाँ प्रतिपल गलि रहल अछि । जँ–जँ हमर मृत्युक समय समीप आबि रहल अछि, हमर आत्मा तोहर मायक आत्मा सँ एकाकार होयबा ले' उद्यत भए रहल अछि ।"

ई शब्द बजबा काल हुनक मुँह पर अनुपम आभा छिटकि आएल छलनि । ओ क्रमशः अपन हाथ सँ अपन गेडुआक तर सँ

सोनाक फ्रेम मे मढ़ल एकटा फोटो निकालि कए ओहि पर अपन नजरि केन्द्रित करैत बजलाह– "एम्हर आ सलमा, एहि मे अपन माय केँ देख।"

सलमा आँखिक नोर पोछैत फोटो केँ किछु क्षण धरि एकटक देखैत रहलि आ ओकरा 'माँ, माँ' कहैत पुनःपुनः चुमैत रहलि, जेना ओ अपन कँपैत ठोर सँ अपन आत्मा केँ ओहि मे प्रवाहित कए देबए चाहैत हो !

मानवताक ठोर पर सर्वाधिक मधुर जे शब्द होइछ से थिक– 'माँ' । ई हृदयक अन्तस्तल सँ अबैत प्रेम, आशा आ माधुर्य सँ ओतप्रोत एकटा अनुपम शब्द थिक ।

जननी सर्वस्व थिकीह— ओ निराशा मे धैर्य, दीनता मे आशा आ दौर्बल्यक शक्ति छथि । ओ प्रेम, क्षमा आ सहानुभूतिक स्रोत छथि । जे मातृविहीन भए जाइछ ओकरा सँ ओ पवित्र आत्मा छिना जाइत छैक जे सर्वदा ओकर रक्षा करैत छैक, आशीष दैत छैक ।

प्रकृति मे सब जननीएक गुणगान करैछ । सूर्य पृथ्वीक माता थिकैक, जे ओकरा अपन ऊर्जा सँ अनुप्राणित करैत छैक । ओ एहि सृष्टिक रातिओ केँ ताधरि संग नहि छोड़ैत छैक यावत् समुद्रक गीत, पक्षीक कलरव आ जलस्रोतक कल–कल शब्दक लोरी सँ एहि पृथ्वी केँ निद्रावसन्न नहि कए दैत छैक ।

ई पृथ्वी गाछ–वृक्ष आ फूल–पत्तीक जननी थिकीह । ई ओकरा जन्म दैत छथि, पालैत छथि आ जीवन–प्रदान करैत छथि । तहिना गाछ–वृक्ष फल–फूल आ बीआक माता बनैत अछि । तेँ माता समग्र जीवक अस्तित्वक प्रतीक, सौंदर्य आ प्रेम सँ परिपूर्ण एकटा सनातन शक्ति होइछ ।

सलमा जखन शिशुए छलि, तखनहिँ मातृहीन भए गेल छलि, तेँ ओकरा अपन माताक कोनो स्मृति नहि छलैक । किन्तु, जखन ओ अपन मायक छवि देखलक, ओ कानि उठलि– "माँ, माँ !" 'माँ' शब्द मनुष्यक हृदय मे सर्वदा सन्निहित रहैत छैक, किन्तु ओ मात्र उदासी आ उल्लासक क्षण मे ओकर ठोर पर ओहिना आबि जाइत छैक जेना गुलाबक हृदय सँ सुगंधि निकलि कऽ स्वत: स्वच्छ आ धूमिल पवनक संग मिश्रित भए जाइछ । सलमा अपन मायक फोटो केँ ताधरि चुमैत रहलि यावत् ओ अचेत भए अपन पिताक बिछाओन पर खसि नहि पड़लि ।

वृद्ध अपन दुनू हाथ ओकर माथ पर रखैत बजलाह— ''बेटी, हम अहाँकेँ अहाँक मायक चित्र मात्र देखौलहुँ अछि । किन्तु सुनू, आइ हम अहाँकेँ हुनक वाणी सुनबैत छी ।"

सलमा पक्षीक नवजात शिशु जकाँ, जे ध्यानस्थ भए अपन मायक उड़ब देखैत अछि, पिता दिस नजरि उठौलक ।

फेरिस इफानी बाजब शुरू कएलनि– "अहाँक माय, जखन अहाँ शिशुए छलहुँ, पितृविहीन भए गेल छलीह । पिताक मृत्यु पर बहुत कनली । किन्तु, ओ बुद्धिमती आ धैर्यवती छलीह, तेँ पिताक संस्कारक पश्चात् एही कोठली मे हमर हाथ धऽ कए कहने रहथि– 'फेरिस, हमर पिता मरि गेलाह, आ आब अहाँ, एहि संसार मे, हमर एकमात्र सहायक छी । प्रेम हृदय सँ निकलि कए वृक्षक शाखा जकाँ विभिन्न दिशा मे विभाजित भए जाइत छैक, किन्तु एक शाखाक भग्न भेला सँ वृक्षक मृत्यु नहि भए जाइछ, यद्यपि एहि सँ ओ पीड़ित अवश्य होइछ । ओ वृक्ष अपन सबटा जीवन, सबटा रस अपन अवशिष्टे शाखा केँ समर्पित कए दैत छैक, जाहि सँ ओ पूर्णतया विकसित भए रिक्त स्थान केँ भरि सकए ।' ठीक यैह शब्द अहाँक माय हमरा कहने छलीह जखन हुनक पिताक मृत्यु भऽ गेल छलनि ।

आ अहूँ केँ यैह शब्द कहबाक चाही, जखन हमर ई शरीर चिरनिद्रा मे लीन भए जाएत आ हमर आत्मा ईश्वरक अंक लागि जाएत ।"

सलमा अश्रुप्लावित आँखि आ विदीर्ण हृदय सँ बाजलि— ''जखन माय पितृविहीन भेल छलीह, अहाँ हुनक पिताक रिक्तस्थान केँ पूर्त्ति कएने छलियनि, किन्तु अहाँक मृत्युक बाद के अहाँक स्थान लेत ? ओ ओहि समय मे अपन सत्यनिष्ठ आ प्रिय पतिक संरक्षण मे छलीह, हुनका लेल हुनक शिशु सेहो संतोषक आधार छलनि, किन्तु अहाँक मृत्युक बाद हमरा के संतोष देत ? अहाँ हमर माता, पिता आ मित्र सबकिछु छी ।"

ई कहैत ओ हमरा दिस घुमि हमरा पकड़ि कए बाजलि— "अहाँक मृत्युक पश्चात् ई हमर एकमात्र संगी रहताह, किन्तु ई हमरा की धैर्य बन्हओताह जखन स्वयं पीड़ित छथि ? एकटा निराश आत्मा दोसर टूटल हृदय केँ कोना धैर्य दिआ सकैत छैक ? एकटा उदास नारी अपन पड़ोसिनक उदासी मे धैर्य नहि पाबि सकैछ। एकटा पक्षी, जकर पाँखि टुटि गेल होइक, कोना उड़ि सकैछ ? ई हमर आत्मीय मित्र छथि, किन्तु पहिनहिँ हम हिनक हृदयकेँ अपन उदासी सँ भारी आ आँखि केँ तेना अश्रुप्लावित कए देने छियनि जे हिनको आँखिक आगाँ अन्हारे–अन्हार छनि । ई हमर प्रिय भाइ छथि जे हमर उदासी केँ बाँटि कए हमरा कना दैत छथि । आ, ई नोर हमर कटुता केँ बढ़ा दैत अछि, हृदय केँ दागि दैत अछि ।"

सलमाक शब्द हमर हृदय केँ बेधि रहल छल । हमरा लागल, आब हम सलमाक पीड़ा केँ सहन नहि कए सकब । वृद्ध इफानी ओकर गप्प सुनि, बसातक झोँकी मे दीप–शिखा जकाँ शोक सँ कँपैत रहलाह । फेर ओ अपन हाथ उठा कए बजलाह— "हमरा शान्तिपूर्वक प्रस्थान करए दिअ बेटी ! हम एहि पिजड़ाक सीमा केँ आब तोड़ि चुकल छी । हमरा जुनि रोकू, आब उड़ि जाए दिअ ।

अहाँक माय हमरा बजा रहलि छथि । आकाश निर्मल अछि आ सागर प्रशान्त । हमर नाओ यात्राक लेल उद्‌यत अछि । हमरा आब नहि बिलमाउ । हमर एहि शरीर केँ मृतात्मा सभक शरीरक संग विश्राम करए दिअ, स्वप्न सँ जागि कए एहि उषा मे अपन आत्मा केँ जगाबए दिअ; हमर आत्मा केँ एक बेर अपन आत्माक आलिङ्गन मे बान्हि लिअ आ हमरा आशाक एकटा चुम्बन दए दिअ । हमर मृत-शरीर पर अहाँ दु:ख आ उदासीक बिन्दु-मात्र नोर नहि बहाएब, भऽ सकैत अछि घास-पात आ फूल-पत्ती, ओकर कटुताक कारण, हमर शरीर सँ जीवन-रस लेब अस्वीकार कए देअए ।

हमर हाथ पर दीनताक नोर जुनि बहाउ, भए सकैछ हमर सारा पर ओ काँट भए कए उगि आबए । हमरा ललाट पर पीड़ाक रेखा नहि उभरए दिअ, भए सकैत अछि चंचल पवनक झोँकी ओकरा पढ़ि लेअए आ हमर अस्थिक धूराकेँ हरिअर घास धरि लए जाएब अस्वीकार कए देअए... बाउ, जीवन पर्यन्त अहाँ हमर प्रेमक प्रतीक रहलहुँ आ मरणोपरान्तो अहाँ हमर प्रेमक प्रतीक रहब । हम कतहु रही, हमर आत्मा सर्वदा अहाँकेँ देखैत रहत, अहाँक रक्षा करैत रहत ।''

तखन इफानी अर्द्धनिमीलित आँखि सँ हमरा दिस तकैत बजलाह— ''बेटा, अहीँटा सलमा केँ अपन भाइ जकाँ छिऐक, जेना अहाँक पिता हमरा हेतु छलाह । विपत्ति मे ओकर मित्र बनि कए अहाँ ओकर आश्रय बनबैक । ओकरा हमरा ले' शोक नहि करए देबैक, कारण शोक मृतात्माक हित मे नहि होइछ । ओकरा अहाँ रोचक कथा-पिहानी सुनएबैक, ओकरा जीवनक काव्यमयता सँ परिचय करएबैक, जाहि सँ ओ अपन उदासी केँ बिसरि सकए ।

अहाँ अपन पिता केँ हमर स्मरण दिअएबनि आ हुनका सँ

हमर सभक कैशोर्यक खीसा सुनएबाक आग्रह करबनि । अहाँ हुनका इहो कहबनि जे जीवनक अन्तिम क्षणमे, अहाँक स्वरूप मे, हुनका हम पुनः प्रेम कएलियनि ।"

नीरवता व्याप्त भए गेल । हमरा हुनक मुँह पर मृत्युक पीतिमा स्पष्ट दृष्टिगोचर भए रहल छल । एही बीच ओ अपन आँखि ऊपर दिस घुमओलनि आ बजलाह— "वैद्य केँ जुनि बजाउ । भए सकैत अछि, ओ हमर दण्डक एहि अवधि केँ आओर बढ़ा देथि । दासताक दिन लदि चुकल छैक, आब हमर आत्मा विस्तृत आकाशक स्वतंत्रताक अन्वेषण मे लागल अछि । पंडा-पुरोहितकेँ सेहो जुनि बजाउ, कारण जँ हम पापी छी तँ ओकर प्रार्थना हमरा बचा नहि सकैछ आ जँ हम निर्दोष छी तँ हमर उद्धर्वगति ओ द्रुतो नहि कए सकैछ । मनुष्यक इच्छा दैवी इच्छा केँ परिवर्त्तित नहि कए सकैछ, जेना ज्योतिषी ग्रह-नक्षत्रक गति केँ नहि बदलि सकैछ । हमर मृत्युक पछाति वैद्य आ पुजेगरी केँ जे फुरैनि, करए देबनि, कारण मृत्युक बाद हमर यात्रा निर्बाध रूपेँ हमर अन्तिम पड़ावक लेल जारी रहत ।"

मध्य-रात्रिक बीच इफानी अन्तिम बेर अपन आँखि खोलि लग मे बैसलि सलमा दिस दृष्टिपात कएलनि । ओ किछु बजबाक प्रयास कए रहल छलाह, किन्तु बाजि नहि सकलाह, कारण मृत्यु हुनक वाणी केँ पहिनहि अवरुद्ध कए देने छलनि । तथापि ओ कहुना कुहरलाह— "रात्रिक अवसान भए रहल छैक, सलमा...!" आ तुरत हुनक घाड़ दोसर दिस लटकि गेलनि । यद्यपि हुनक मुखमंडल श्वेत भए गेल छलनि, तथापि हुनक ठोर पर मुस्कानक एकटा रेखा झलकि आएल छलनि ।

सलमा पिताक हाथक स्पर्श कएलक । इफानीक हाथ सर्द भए गेल छलनि । मूड़ी उठा कए ओ हुनक मुँह दिस नजरि केन्द्रित

कएलक, किन्तु ओ पहिनहि मृत्युक आवरण सँ आवृत भए चुकल छलाह । सलमा किछु बाजि नहि सकलि । ओकर आँखिक अश्रुओ सुखा गेल छलैक । ओ किछु काल धरि मूर्तिवत्, पथराएल आँखि सँ इफानीक निर्जीव शरीर केँ देखैत रहलि आ तत्पश्चात् हठात् भूमि पर माथ पटकि चीत्कार कए उठलि— "हे विधाता, दया करू, हमर टूटल पाँखि केँ जोड़ि दिअ ।"

फेरिस इफानी मरि गेलाह । हुनक आत्मा परमात्मा मे आ पार्थिव शरीर पृथ्वीक गर्भ मे समाहित भए गेलनि । मंसूर बे'गालिब हुनक सम्पत्तिक अधिकारी भए गेलाह, किन्तु सलमा जीवनक कारागारमे दु:ख आ पीड़ाक जिनगीक बंदी बनि कए रहि गेलि ।

हम उदासीक समुद्र मे उबडुब करैत रहलहुँ । दिन आ राति गिद्ध जकाँ नोचि-नोचि कए हमरा अपन आहार बनबैत रहल । पुस्तक आ शास्त्रक अध्ययन मे मोन लगा कए हम अपन दुर्भाग्यकेँ बिसरबाक प्रयास करैत रहलहुँ, किन्तु हमर ओ प्रयास आगि मे घी दए ओकरा शान्त करबाक प्रयास जकाँ छल, कारण भूतक गर्भ मे नुकायल दु:खान्त नाटकक करुण क्रन्दनक अतिरिक्त ओहि समय मे हमरा आओर किछु नहि सुनाइ पड़ैत छल ।

निराशा मनुष्यक दृष्टिकेँ दुर्बल बना दैत छैक आ कानकेँ बहिर कए दैत छैक । कारण, ओहि समय मे विनाश, विभीषिका आ पीड़ित हृदयक धड़कनक अतिरिक्त मनुष्य ने किछु देखि पबैछ, ने सुनि सकैछ ।

आठम अध्याय

बेरूत शहर आ लेबनान केँ जोड़एवला अखरोट, जलपइ आ 'विलो'क गाछ सँ पूर्ण जे फुलबाड़ी, जंगल आ पहाड़ी सब छैक, तकरे बीच उज्जर पाथरक एक चट्टान केँ खोधि कए बनाओल एकटा छोट-छीन सन अति प्राचीन मंदिर छैक । यद्यपि मुख्य मार्ग सँ एहि मंदिरक दूरी आधा माइल सँ बेसी नहि होएतैक, तथापि ओहि दिन मे, पुरातत्त्वक आ भग्नावशेष मे विशेष रुचि राखएवला किछु व्यक्ति केँ छोड़ि, कमे लोक ओहि मन्दिर केँ देखने छल होएतैक । तथापि, लेबनान मे नुकायल आ विस्मृत कतेको मनोरम स्थान मे एक इहो मंदिर छल । स्थानक नीरवताक कारण ई मंदिर एसगर प्रेमी आ पूजक-लोकनि लेल अनुपम स्थान छल ।

मंदिर मे प्रविष्ट होइते पुबारी कातक जाहि देबाल पर नजरि पड़ैत छैक ओहि पर सिंहासन पर विराजमान प्रेम आ सौंदर्यक देवी 'एश्थर'क फिनीशी छवि, जकरा चारू कात सँ घेरने— विभिन्न भंगिमा मे ठाढ़ि— सात टा नग्न कुमारिक आकृति खोधल छैक । पहिलक हाथ मे मशाल छैक, दोसरक हाथ मे वीणा, तेसरक हाथ मे धुपदानी, चारिमक हाथ मे सुरापात्र, पाँचमक हाथ मे गुलाबक एकटा ठारि, छठमक हाथ मे फूलक माला आ सातमक हाथ मे तीर-धनुष छैक— सातो भक्तिपूर्वक 'एश्थर'केँ देखैत ।

दोसर देबाल पर पहिल सँ किछु बेसी आधुनिक, क्रूस पर ठोकल ईशाक छवि चित्रित छैक । हुनक एक कात हुनक उदास माय–'मेरी मैग्लीन' आ दूटा आन कनैत नारीक चित्र बनल छैक । रोमन शैलीक एहि चित्र सँ लगैछ जे ई पंद्रहम वा सोरहम शताब्दी मे खोधल गेल होएतैक ।[1]

पछबारी कातक देबाल पर दूटा वृत्ताकार खिड़की बनल छैक जाहि बाटेँ सूर्यक किरण आबि मन्दिरक मूर्ति सबकेँ स्वर्णिम आभा प्रदान करैत छैक । मन्दिरक भीतर बीचोबीच एकटा वर्गाकार चबुतरा बनल छैक जकर चारू कात प्राचीन शैलीक विविध प्रकारक चित्रकला बनाओल छैक । किन्तु, ओहि सब मे सँ किछु केँ, ओहि पर चढ़ाओल रक्त–पिण्डक सुखाएल अवशेष, अस्पष्ट बना देने छैक । अनुमानतः प्राचीन कालमे एहि चबुतरा पर बलि आ विभिन्न प्रकारक आन उपहार चढ़ाओल जाइत छल होएतैक ।

प्रगाढ़ शान्तिक अलाबे ओहि मंदिर मे आओर किछु नहि छैक । ओहि ठामक नीरवता मनुष्य लेल मात्र प्राचीन इतिहास, देवी–देवताक रहस्य आ धर्मक विकास प्रदर्शित करैत छैक । मन्दिरक ई दृश्य कविक आत्माकेँ वास्तविक संसार सँ दूर लऽ जा कए ओकर हृदय मे एकेटा भाव जगबैत छैक जे मनुष्य मे धार्मिक प्रवृत्ति जन्मजात होइत छैक ।

मनुष्य सर्वदा एहन कोनो शक्तिक आवश्यकताक अनुभव करैत रहल अछि जे ओकरा ले' अदृश्य छलैक । आ तेँ ओकर खीचल रेखा आ चित्र जीवन–मृत्युक बीच ओकर हृदय मे निहित सुषुप्त इच्छा केँ प्रदर्शित करैत छैक ।

----

1. पुरातत्त्वज्ञ एहि तथ्यकेँ प्रमाणित कए चुकल छथि जे पूर्वक अनेको वर्तमान गिरिजाघर प्राचीन काल मे 'फिनीशी' आ यूनानी देवताक मंदिर छल ।

प्रत्येक मास एक बेर ओहि मंदिर मे हम सलमा सँ किछु काल ले' भेट करैत रहलहुँ । ओहि विचित्र चित्रकला केँ देखि कए हम बड़ी-बड़ी काल धरि क्रूस पर चढ़ल ईशा 'एश्थर'केँ प्रेमक प्रतीक मानि कए ओकर पूजा करैत 'फिनीशी' नर-नारी आ ओहि मानवक सम्बन्ध मे सोचैत रहि जाइत छलहुँ, एहि काल-चक्र मे तकर नामक अतिरिक्त कहबा ले' आओर किछु शेष नहि छैक ।

सलमाक संग मिलनक ओहि नैसर्गिक घड़ीकेँ, जाहि मे आशा-निराशा, सुख-दु:ख, उदासी आ दैन्य भाव एके संग सम्मिश्रित रहैत छल, शब्द मे वर्णन करब हमरा ले' कठिन अछि । मन्दिरक ओहि नीरवतामे हमरा लोकनि एक-दोसराक हृदयक भावनाक आदान-प्रदान करैत छलहुँ, दु:स्वप्नक भय केँ काल्पनिक आशाक ज्योति सँ भगबैत रहलहुँ, वर्त्तमानक सुख-दु:ख आ भविष्यक प्रति आशंका एक-दोसराक संग बँटैत रहलहुँ । मानसिक झंझावातक ओहि क्षण मे कखनो काल हमरा सबकेँ 'प्रेम'क अतिरिक्त आओर कथूक प्रज्ञा नहि रहैत छल, आ तेँ क्षण भरि लेल नोर सेहो पोछि लैत छलहुँ आ हँसी सेहो हमरा सभक ठोर पर झलकि उठैत छल । समाधिक एहि क्षण मे अकस्मात् हमसब आलिङ्गनबद्ध भए एक-दोसरकेँ चुमिओ लैत छलहुँ । हमर हृदय आह्लाद सँ भरि जाइत छल, आ सलमाक कपोल पर, पर्वतक भाल पर पड़ैत सूर्योदयक पहिल किरण जकाँ, एकाएक लाली छिटकि अबैत छलैक । सहसा हमर सभक नजरि अस्ताचलगामी सूर्यक नारंगी रंग सँ रंगल क्षितिज पर पड़ैत छल आ हम सब मंत्रमुग्ध भए ओकरा देखैत रहि जाइत छलहुँ ।

हमरा सभक बीचक गप्प-सप्प मात्र प्रेमालापे धरि सीमित नहि रहैत छल । कखनो काल हम सब समसामयिक चर्चा मे बहि एक-दोसरा सँ विचारक आदान-प्रदान सेहो करैत छलहुँ । गप्प-सप्पक

क्रम मे सलमा बराबरि समाजमे नारीक स्थान, ओकर चरित्र पर पड़ल पुरान पीढ़ीक छाप, पति-पत्नीक बीचक सम्बन्ध आ ओहि आध्यात्मिक रोग आ भ्रष्टाचारक मादे सेहो अपन विचार प्रस्तुत करैत छलि जे ताहि दिनक विवाहित जीवनक लेल खतरा भए उपस्थित छलैक ।

हमरा मोन अछि, एक बेर ओ कहने छलि— "कवि आ साहित्यकार नारीक वास्तविकताकेँ बुझबाक प्रयत्न करैत रहलाह अछि, किन्तु ओ सब अद्यावधि ओकर हृदय मे निहित रहस्य केँ बुझबामे असफल रहलाह अछि । कारण, ओ सब सर्वदा नारीकेँ शारीरिक अवयव मात्र पर अपन ध्यान केन्द्रित कए ओकरा देखैत रहलाह अछि, तेँ ओ सब ओकर अन्तर केँ देखि पएबा मे अद्यावधि विफल रहलाहे । ओ सब नारीकेँ मात्र घृणाक चश्मा सँ देखैत रहलाह अछि तेँ नारी मे हुनका सभकेँ दौर्बल्य आ पराजय केँ छोड़ि आओर किछु नहि भेटलनि अछि ।"

दोसर दिन ओ मन्दिरक एकटा चित्र देखि कए कहने छलि— "पाथरक हृदय पर अंकित एतुक्का दूटा चित्र सिंहासन पर विराजमान 'एश्थर' आ क्रूसक समीप ठाढ़ि भेलि मेरी— प्रेम आ उदासी, अनुराग आ बलिदानक बीच द्वन्द्व मे फँसल नारीक हृदयक गुप्त रहस्य आ ओकर मूल कामनाक प्रतीक थिक । पुरुष कीर्त्ति आ प्रतिष्ठा कीनैत अछि, किन्तु नारी ओकर मूल्य चुकबैत छैक ।"

ईश्वर आ नील गगन मे उड़ैत पक्षी समूहकेँ छोड़ि हमर सभक गुप्त मिलनक खबरि आर ककरो नहि छलैक । सलमा 'पाशा-पार्क' धरि बग्घी मे आबि, ओतए सँ मन्दिर धरि पयरे चलि अबैत छलि, जतए सर्वदा ओ हमरा प्रतीक्षारत पबैत छलि ।

हमरा लोकनि लोक-लज्जा सँ पीड़ित नहि छलहुँ, कारण अग्निपरीक्षा सँ पवित्र कएल आत्मा लोकापवाद आ अनादरक भय सँ

मुक्त होइछ । ओ दासताक रीति आ मानव हृदयक प्रेमक विरुद्धक नीतिक बंधन सँ स्वतंत्र होइछ । एहन आत्मा ईश्वरक समक्ष निर्भीकता आ गौरव सँ ठाढ़ भए सकैछ ।

मनुष्यक ई समाज अनादि कालसँ भ्रष्ट नीतिक आगाँ ताधरि झुकैत आएल अछि यावत् ओकरा प्रकृतिक शाश्वत आ सर्वोपरि नियम सँ परिचय नहि भेल छलैक । जे मनुक्ख सर्वदा सँ मोमबत्तीक मद्धिम प्रकाशक अभ्यस्त अछि, ओ सूर्यक प्रकाश केँ कोना सह्य कए सकैछ ?

आध्यात्मिक जड़ता पुस्त-पुस्ताइन चलि कए जखन मनुष्यक स्वभावक अंग बनि जाइत छैक, तँ मनुष्य ओकरा रूढ़ि नहि मानि ईश्वरीय वरदान मानए लगैछ । एहन समाज जँ कोनो व्यक्ति केँ एहि रोग सँ मुक्त पबैछ तँ ओ ओकरा लज्जा आ अनादरक पात्र मानि बैसैछ ।

सलमा जेँ लऽकए अपन पतिक घर सँ हमरा सँ भेट करए अबैत छलि, तेँ जे ओकरा भ्रष्ट मानैत अछि से दुर्बल आ रुग्ण मानसिकताक शिकार अछि, जे स्वस्थ मानसिकता केँ विद्रोहक संज्ञा दैत अछि । ओ सब ओहि क्षुद्र कीड़ी जकाँ अछि जे पयरक तर पिचा जयबाक भयसँ अन्हार केँ सेबने रहैत अछि ।

जे पीड़ित बंदी कारागार केँ तोड़ि कए भागि सकैछ किन्तु भगैत नहि अछि, ओ कापुरुष थिक । सलमा—एकटा निर्दोष आ पीड़ित बंदी— अपना केँ दासताक बंधन सँ मुक्त करबा मे असमर्थ छलि । किन्तु जँ बंदी-गृहक खिड़की-केबाड़ सँ सस्य-श्यामला धरती आ उन्मुक्त आकाश केँ एक नजरि देखि लैत छलि तँ की ओ दोषी छलि ? की लोक ओकरा, पतिक प्रति मात्र एही ले' सत्यनिष्ठ नहि मानतैक कारण ओ 'एश्थर' आ ईशाक मूर्त्तिक समक्ष आबि कए हमरा सँ भेट करैत छलि ? लोक केँ जे फुरैक कहए दिऔक,

किन्तु सलमा जीवनक भयानक पाँक कें, जे आन आत्मा कें धँसा दैत छैक, पार करैत सांसारिक दुर्गुण सँ मुक्त दोसर संसार मे पहुँचि चुकल अछि, जतए भुकैत गीदड़क आ फुफकारैत सापक ध्वनि नहि पहुँचि सकैत छैक ।

संसार कें जे फुरैक हमरा मादे बाजओ, कारण, जे आत्मा मृत्युक विभीषिकाक दर्शन कए चुकल अछि, तकरा चोर डेरा नहि सकैत छैक । जाहि सिपाहीक गरदनि पर तरुआरिक धार चमकि चुकल होइक, जकर पयरक तर सँ रक्तक धार प्रवाहित भए गेल होइक, ओ धीया-पूताक पाथर फेकबा सँ विचलित नहि भए सकैछ ।

नवम अध्याय

जून मासक अन्तिम सप्ताह मे, जखन शहरक गर्मी सँ तबधि कए कतेको लोक पहाड़क शरण मे चल गेल छल, एक दिन हम अपन हाथ मे कविताक एक पुस्तक लए सलमा सँ भेट करऽ पुनः ओहि मंदिर मे गेल रही । मंदिर पहुँचि, सलमाक प्रतीक्षाक क्रममे पुस्तकक पन्ना उनटबैत-पुनटबैत, ओहि ग्रन्थक कविताक माधुर्यसँ आह्लादित हम; ओहि सम्राट, कवि आ सेनापतिक संसार मे भासि गेल रही जे अपन आँखि मे नोर आ हृदय मे उदासी भरने, निराश भए ग्रेनाडाक भूमि आ समाजक संग अपन प्रासाद धरि केँ छोड़ि चल गेल छलाह । करीब एक घंटाक प्रतीक्षाक पश्चात्, फुलबाड़ीक बीच सँ होइत, मंदिर दिस अबैत सलमा पर हमर नजरि पड़ल । अपन हाथक छत्ता केँ भूमि पर ओ तेना टेकैत आबि रहलि छलि जेना संसारक समस्त चिंताक बोझ ओकरे कान्ह पर होइक ।

ओ आबि कए हमरा लग बैसि गेलि । ओकर आकृतिक भंगिमा आ आँखिक ज्योति मे अकस्मात् परिवर्त्तन स्पष्ट छलैक, जे हमर जिज्ञासा केँ आओर जगा रहल छल ।

किन्तु, सलमा हमर मनोभाव केँ बुझि गेलि । ओ क्रमशः हमरा लग आबि अपन हाथ हमर माथ पर रखैत बाजलि—

"प्रियतम, एत्तहि हमरे लग बैसू । हमरा भरि आँखि अपन आकृति देखि लेबए दिअ, मोनक पियास मेटा लेबए दिअ । बिछुड़नक घड़ी आबि गेल अछि ।"

"की हमर सभक एहि भेट-घाँटक खबरि अहाँक पति धरि पहुँचि चुकल छनि ?" हम जिज्ञासा कएलिऐक ।

"हमर पतिकेँ हमर कोन चिंता छनि ? ओ तँ इहो नहि जनैत छथि जे हम अपन समय कोना कटैत छी ? हुनका ओहि अबला सब सँ फुर्सति कतए, जे अपन गरीबीक दोषेँ शोणित आ नोर मे सानल दू कओर दाना ले' अपन देह बेचि दैत अछि, बदनामीक बाट धए लैत अछि ।"— ओ बाजलि ।

"तखन एतए, ईश्वरक शरणमे, हमरा सँ भेट करए अहाँ किएक नहि अबैत छी ? की अहाँक आत्मा बिछुड़न लेल प्रस्तुत भए चुकल अछि ?" —हम पुछलिऐक ।

ई कथा सुनि ओकर आँखि भरि अएलैक । ओ बाजलि- "नहि, नहि, प्रियतम ! हमर सभक आत्मा आब एकाकार भए चुकल अछि । तखन ओ बिछुड़नक कामना कोना कए सकैत अछि ? अहाँ केँ देखैत हमर आँखि कहियो थाकि नहि सकत । कारण, अहाँ ओकर ज्योति छी । किन्तु हमर अदृष्ट मे, जीवनक एहि दुर्गम बाट पर जँ पएर मे कड़ी-बेड़ी बान्हिए कए चलब लिखल अछि तँ हम एहन कामना कोना कए सकैत छी जे अहूँक भाग्य एहने भए जाए ?"

ओ आगाँ बाजलि— "हम कतेक कहब ? पीड़ा सँ हमर वाणी अवरुद्ध भए रहल अछि, दैन्य हमर ठोर केँ सीबि देने अछि, तेँ ओ काँपि तक नहि पबैछ । तथापि हम एते धरि कहबे करब, हमरा भय अछि, कतहु अहूँ ओही जालक शिकार नहि बनि जाइ जाहि मे हम पहिनहि फँसि चुकल छी ।"

हम पुछलिऐक— "अहाँक की अभिप्राय अछि, अहाँ ककरा सँ भयभीत छी ?"

ओ अपन मुँह केँ दुनू हाथ सँ झँपैत बाजलि— "पादरी केँ ई समाद पहुँचि चुकल छनि जे जाहि कब्र मे ओ हमरा गाड़ि चुकल छथि, मास मे एक बेर हम ताहि सँ बहरा अबैत छी ।"

"की पादरी केँ हमर सभक एहि भेट-घाँटक खबरि छनि ?" —हम जिज्ञासा कएलिऐक ।

"जँ हुनका भनक लागल रहितनि तँ हमरा अहाँ एतए बैसल नहि देखितहुँ । किन्तु, हुनका किछु संदेह अवश्य भए रहल छनि आ ओ अपन सब नोकर-चाकर केँ हमरा पर विशेष नजरि रखबा ले' निर्देश दए चुकल छथि । तेँ हमरा होइत रहैत अछि जे घर मे आ बाहर, सब ठाम, सब जेना हमरे पर नजरि गड़ौने रहैत हो, चारू कात सँ सब हमरे पर आंगुर उठा रहल हो, कान पाथि कए सब हमर हृदय मे उठैत विचारक कम्पन केँ सुनबाक प्रयास मे लागल हो ।" —ओ बाजलि ।

ओ किछु क्षण धरि मौन रहलि ओ फेर बाजब आरम्भ कएलक । ओकर दुनू आँखि सँ दहो-बहो नोर बहि रहल छलैक— "हम पादरी सँ भयभीत नहि छी । कारण, जे पहिनहि डुबि चुकल अछि तकरा जलाशयक डर की होएतैक ? किन्तु, अहाँ एखनहुँ युवावस्थे मे छी, सूर्यक किरण जकाँ स्वतंत्र छी । हमरा आब भाग्यक भय नहि अछि, कारण ओ पहिनहिँ अपन तरकसक सबटा तीर हमर हृदय मे गाँथि चुकल अछि । किन्तु, कीर्त्ति आ प्रगतिक मार्ग एखनहुँ अहाँक प्रतीक्षा कए रहल अछि । अहाँक एहि यात्रा मे ई दुष्ट साप सब व्यवधान नहि उपस्थित करए, तकरे हमरा चिन्ता होइछ ।"

"जे मनुष्य दिनक प्रकाश मे सर्प-दंशक अनुभव नहि कएने

हो, आ राति मे हिंसक जन्तुक आक्रमण नहि सहने हो, ओ दिन-राति ठकले जाएत । किन्तु सलमा, एकटा गप्प कहू— की लोकापवाद आ समाजक क्षुद्रता सँ बँचबाक उपाय मात्र बिछुड़ने टा छैक ?"— हम फेर कहलिऐक— "की प्रेम आ स्वतंत्रताक सब मार्ग बंद भए गेल छैक ? की मरणशील मनुष्यक इच्छाक आगाँ ठेहुनियाँ देबाक अलावे आओर कोनो मार्ग हमरा सब ले' बचल नहि अछि ?"

"हमरा सभ लेल बिछुड़नक अतिरिक्त आर किछु नहि बाचल अछि ।" —ओ उत्तर देलक ।

हम ओकर हाथ कसि कए पकड़ि लेलिऐक । हमर विद्रोही आत्मा दहाड़ि उठल— "हम सब बहुत काल धरि मनुष्यक इच्छाक दास बनल रहलहुँ अछि । जहिया सँ एक-दोसरा सँ हमर सभक भेट भेल, एहि आन्हर समाजक पाछाँ-पाछाँ चलि कए हम सब ओकरे मूर्त्तिकेँ पूजैत रहलहुँ अछि, एहि पादरीक हाथक खेलौना बनल रहलहुँ अछि, तेँ की जाधरि मृत्यु नहि भए जाइत अछि, ओकरे इच्छाक दास बनल रहब ? की ईश्वर मनुष्य केँ जीवन एही हेतु देने छथिन जे ओ एकरा मृत्युक चरण मे सौंपि देअए ? की ओ हमरा सभकेँ एही ले' स्वतंत्र बनौने छथि जे अपन स्वतंत्रता केँ दासताक अनुगामी बना ली ? जे मनुष्य अपन आत्माक आगिकेँ अपने हाथेँ मिझबैत अछि ओ ईश्वरक दृष्टि मे अविश्वसनीय अछि, कारण मनुष्यक हृदय मे प्रज्वलित ई आगि ईश्वरीय देन थिकैक । जे उत्पीड़नक प्रति विद्रोह नहि करैत अछि ओ अपने प्रति अन्याय करैछ । सलमा, हम सब एक-दोसरा केँ प्रेम करैत छी; प्रेम संवेदनशील आत्माक ईश्वरप्रदत्त एकटा अमूल्य निधि थिकैक । की हम सब एहि अमूल्य निधि केँ पशु सभक आगाँ ओहिना लुटा देबैक ?

ई विश्व सौंदर्य आ आश्चर्यसँ परिपूर्ण छैक । हम सब पादरी

द्वारा खूनल कूपक मण्डूक बनि कए जीबै ले' वाध्य तँ नहि छी । जीवन स्वतंत्रता आ आनन्दक खजाना थिकैक । किएक ने हम सब दासताक एहि बेड़ी केँ तोड़ि, स्वतंत्र भए शान्तिक दिशामे प्रयाण करी ? चलू, हम सब एहि मंदिर सँ चलि कए ईश्वरक शरण मे चली । चलू, हम सब एहि दासता आ अज्ञानताक भूमि छोड़ि कए कोनो सुदूर देश मे चली, जतए एहि चोर सभक भय सँ मुक्त जीवन जीवि सकब । चलू, हम सब समुद्रक कछेर पर रातिए मे नाव पकड़ि बढ़ि चली आ समुद्रक पार कोनो प्रदेश मे आनन्द आ आह्लादक नवीन जीवन आरंभ करी । द्वन्द्व छोड़ू । चलू । ई क्षण राजाक राजमुकुट सँ बेसी बहुमूल्य आ परीक सिंहासन सँ अधिक कमनीय अछि । चलू, हम सब ओहि प्रकाशक अनुसरण करी जे हमरा लोकनिकेँ एहि मरुभूमि सँ निकालि सस्य-श्यामला भूमिक ओहि प्रदेश मे लए चलए जतए सुन्दर फूल आ मोहक सुगंधिवला गाछ जनमैत आ विकसित होइत छैक ।"

ओकर अधर पर उदासीक एक मुस्कान आबि गेलैक । ओ ऊपर दिस तकैत, अस्वीकृति मे अपन गरदनि हिलबैत बाजलि— "नहि, नहि, प्रियतम ! ईश्वरीय इच्छा सँ हमर अंश मे जीवनक कटुते आएल अछि । हम दृढ़तापूर्वक एकरा अद्यावधि सहैत आबि रहलि छी । आब जखन सब समाप्त होएबा पर अछि तँ एहि विषक अन्तिम बिन्दुकेँ सेहो हम धैर्यपूर्वक पीबिए लेब । हमरा आब जीवनक माधुर्य आ आनन्दक आस्वादक सामर्थ्य सेहो नहि अछि, कारण जाहि पक्षीक पाँखि टुटि गेल हो से उन्मुक्त आकाश मे कोना उड़ि सकैत अछि ? जे आँखि मोमबत्तीक मद्धिम प्रकाशक अभ्यस्त भए गेल अछि, ओ सूर्यक तीक्ष्ण रश्मि केँ कोना सहि सकैछ ? आनन्द-उल्लासक चर्चा आब हमरा संग जुनि करू, कारण ओकर स्मृति आब पीड़ाजनक प्रतीत भए रहल अछि । शान्तिक गप्प नहि करू, कारण ओकर परिछाँही सँ हमरा भय होमए लागल अछि ।

किन्तु, हमरा दिस देखू, हम अहाँकेँ ओ पवित्र ज्योति देखाएब जे ईश्वर हमर दग्ध हृदयक छाउर मे बारि देने छथि । अहाँ जनैत छी, हम अहाँकेँ अपन एकमात्र संतान जकाँ प्रेम करैत छी आ यैह प्रेम हमरा, अहाँकेँ हमर अपन प्रभाव सँ बचयबाक प्रेरणा देने अछि । अग्निपरीक्षा सँ पवित्र कएल यैह प्रेम आब हमरा सुदूर देश धरि अहाँक अनुगमन करबासँ रोकि रहल अछि । अहाँक स्वतंत्रता आ सम्मान लेल प्रेम हमर इच्छा केँ पराजित कए चुकल अछि । एक-दोसरा केँ पएबाक प्रवृत्ति सीमित प्रेमक द्योतक थिक । असीमित प्रेम आत्मगत होइछ । कैशोर्य आ अपरिपक्व वयसक प्रेम आलिङ्गन मे विकसित होइत छैक आ एक-दोसराक प्राप्तिसँ संतुष्ट होइत छैक । किन्तु, जे प्रेम स्वर्गक कोरमे जनमि, रात्रिक रहस्यक संग अवनी पर उतरैत छैक, तकर संतुष्टि मात्र ओकर अमरत्व मे निहित होइत छैक, ओ ईश्वर ई इतर आओर ककरो समक्ष नतमस्तक नहि होइछ ।

जखन हमरा ज्ञात भेल जे पादरी बुलो गालिब केँ घर सँ हमर बहराएब स्वीकार नहि छनि आ ओ हमर मनोरंजनक एकमात्र साधन पर अंकुश लगाबए चाहैत छथि, तँ बड़ी काल धरि खिड़की लग ठाढ़ि भेलि हम, समुद्रक सुदूर पार दिस तकैत, ओहि विस्तृत आ स्वतंत्र प्रदेशक सम्बन्ध मे सोचैत, विचार मे डुबलि रही, जतए व्यक्तिगत स्वतंत्रताक कल्पना कएल जा सकैछ । किन्तु, ओहि समय हमरा लागल, जे हम अहीँक समीप, अहीँक हृदयक छाहरि मे, प्रेमेक समुद्र मे डुबि गेल होइ । मुदा ई सब विचार, जे एकटा नारीक हृदय सँ जागि ओकरा पुरान परंपरा केँ तोड़ि स्वतंत्रता आ न्यायक छाहरिक शरण लेबा ले' प्रेरित करैत छैक, सँ हमरा प्रतीत होमए लागल जे हम दुर्बल भए गेल छी; हमर प्रेम सीमित आ दुर्बल भए गेल अछि, जे सूर्यक प्रखर ज्योतिकेँ सहन नहि कए सकैछ । हमर मुँह सँ एक चीत्कार निकलि गेल, जेना हमर सर्वस्व लुटा गेल

हो, किन्तु अकस्मात् हमर अपने नोराएल आँखि मे अहाँक ओहि कालक छवि उतरि आएल जखन अहाँ कहने रही— 'सलमा, आउ। हमरा सभ केँ झंझावात सँ पूर्व बलिष्ठ स्तम्भ जकाँ अटल होएब आवश्यक अछि । आउ, हमरा लोकनि वीर सैनिक जकाँ शत्रुक सामना करी । एहि युद्ध मे यदि हम सब पराजित भए परम गतिकेँ प्राप्त कएलहुँ तँ अमर भए जायब आ यदि विजयी भेलहुँ तँ वीरोचित सम्मानक संग जीवनक उपभोग करब । कठिनता केँ अंगीकार करब हारि कए बैसि जएबा सँ श्रेयस्कर थिक ।' प्रियतम ! ई शब्द अहाँ तखन कहने रही जखन मृत्युक परिछाँही हमर पिताक ऊपर मरड़ा रहल छलनि । किन्तु, अहाँक ई कथन काल्हि हमरा तखन स्मरण भेल जखन निराशाक पाँखि हमरा ऊपर मरड़ा रहल छल । हम अपन चित्त केँ सुस्थिर कएलहुँ तँ हमरा अपन कारागारक अंधकार मे, अपना मे एक विचित्र शक्तिक, एक अनुपम स्वतंत्रताक अनुभूति भेल जकर शक्ति सँ, हमरा लागल, जेना हमरा सभक कठिनता आ उदासी क्षीण भए रहल हो । हमरा लागल, हमरा लोकनिक प्रेम आकाश सँ बेसी विस्तृत, तारागणक प्रदेश सँ बेसी ऊँच आ सागरक गर्भ सँ बेसी गहीँर अछि । हमर दुर्बल आत्मा मे आइ एक नवीन शक्तिक संचार भेल अछि, आइ तेँ हम अपना केँ एक महत्तर उद्देश्यक प्राप्तिक हेतु, एकटा आओर महान् बलिदान करबा ले' समर्थ अनुभव कए रहलि छी । अपन खुशीक हमर ई बलिदान अहाँक सम्मान आ प्रतिष्ठाक रक्षाक हेतु अछि, जाहि सँ अहाँ केँ केओ अपन अत्याचारक शिकार नहि बना सकए.... ।

"एहि सँ पूर्व जखन हम एतए अबैत छलहुँ तँ हमरा होइत छल जेना हमर पएर भयानक कड़ी आ बेड़ी सँ जकड़ल हो, किन्तु आइ हम एतए एकटा भिन्न निर्णय आ नवीन आत्मविश्वासक संग आएलि छी जे एहि कड़ी आ बेड़ी पर अट्टहास कए रहल अछि; हमर मार्ग सुगम प्रतीक भए रहल अछि । एहि सँ पूर्व एहि मंदिर मे

हम भयभीत होइत अबैत छलहुँ, किन्तु आइ हम बलिदानक भावना सँ प्रेरित साहसी नारी जकाँ आएलि छी जे उत्पीड़नक मूल्य बुझैत छैक । आइ हम एतए ओहि नारीक रूपमे आएलि छी जे अज्ञानी समाज आ अपन पिपासु आत्मा सँ अपन प्रेमीक रक्षा करब अपन धर्म बुझैछ । एहि सँ पूर्व हम अहाँ लग थरथराइत परिछाँही जकाँ आबि कए बैसैत छलहुँ, किन्तु आइ हम 'एश्थर' आ ईशा केँ अपन वास्तविक स्वरूप देखबए आएलि छी ।

"हम छाहरि मे जनमैत वृक्ष जकाँ छी, किन्तु आइ हम अपन एक शाखाकेँ, क्षण भरि ले' सूर्यक प्रकाश मे पसारि लेलहुँ अछि। हम आइ अहाँ सँ विदा लेबए आएलि छी, प्रियतम ! हमरा आशा अछि, हमर सभक बिछुड़ब हमर सभक प्रेमे जकाँ महान् होएत । हमर कामना अछि, हमर सभक बिछुड़न ओ आगि बनए जाहिमे धीपि कए कंचन आओर नम्र आ लाल होइत अछि ।"

सलमा हमरा किछु बजबाक वा प्रतिवादक अवसर नहि देलक । ओ हमरा दिस तकैत रहलि, ओकर आँखि अनायास चमकि उठल छलैक आ ओकर मुखमंडल पर देवदूतीक समान एक विशिष्ट आ सम्माननीय आभा छिटकि अएल छलैक । क्षण भरि मे एकाएक ओ हमरा सँ, अभूतपूर्व रूपेँ, आलिङ्गन-बद्ध भए हमर ठोर पर एक दीर्घ, गंभीर आ दहकैत चुम्बन अंकित कए देलक ।

अस्तंगत सूर्य जखन अपन किरणक जाल केँ एहि भूमि पर सँ समेटि रहल छलाह, सलमा मंदिरक बीच मे ठाढ़ि भऽ कए मंदिरक चारू देबाल पर ध्यानस्थ भए देखैत रहलि, जेना ओ अपन आँखिक सम्पूर्ण ज्योति सँ एहि मंदिरक प्रत्येक छवि आ चित्र केँ प्रकाशमय बना देबए चाहैत हो । क्रमशः आगाँ बढ़ि ओ ईशाक पयर लग जाकए बैसि गेलि आ हुनक चरण केँ चुमैत बाजल- "हे ईश्वर, हम 'एश्थर'क आनन्द आ सुख संसार केँ छोड़ि तोरे

'क्रूस'क वरण कए रहलि छी, हम अपना केँ नोर आ रक्त सँ पवित्र कए, फूलक हार केँ त्यागि काँटक हार धारण कए रहलि छी; हम अमृत केँ त्यागि स्वेच्छा सँ विषपायी बनि गेलि छी । हे प्रभु, हमरा अपन ओहि पूजक सभक संग स्वीकार कऽ लएह जे अपन दु:ख पर्यन्त सँ सन्तुष्ट आ उदासी मे आनन्दित रहि, तोरे वरण कएने छथि ।"

ओ उठि कए ठाढ़ि भए गेलि आ हमरा दिस घुमैत बाजलि- "आब खुशी-खुशी हम अपन अन्धकूप मे, दानव सभक बीच, आपस भए जाएब । हमरा प्रति सहानुभूति जुनि देखाउ, हमरा ले' दु:खी जुनि होउ, प्रियतम ! कारण, जाहि आत्मा केँ एक बेर ईश्वरीय आभाक दर्शन भए गेल छैक ओ यमदूतो सँ कहियो भयभीत नहि भए सकैछ । जकर आँखि एक बेर स्वर्गक दिशामे उन्मुख भए चुकल छैक, ओ सांसारिक पीड़ा सँ मुक्त अछि ।"

ई कहैत सलमा मन्दिर सँ आपस भए गेलि । किन्तु, हम विचारक गंभीर सागर मे उबडुब करैत समाधिक ओहि संसारमे हेड़ा गेल छलहुँ जतए सिंहासनपर विराजमान ईश्वरक समक्ष देवदूतीगण मनुष्यक क्रिया-कलापक लेखा-जोखा करैत छथि, आत्मा मानव-जीवनक विपदाक बखान करैत अछि आ देवयानी गण प्रेम, उदासी आ अमरत्वक गीत गबैत छथि ।

जखन हमर भक टूटल तँ राति भए चुकल छलैक । किन्तु हम ओहि उद्यानक मध्य सलमाक शब्दक प्रतिध्वनि, ओकर भंगिमा, ओकर मौन आ ओकर हाथक स्पर्शक स्मरण करैत हतबुद्धि जकाँ ताधरि पड़ल रहलहुँ यावत् हमरा सलमाक विदाइक यथार्थ आ अपन एकाकीपनक पीड़ाक अनुभूति नहि भेल । हमर हृदय टुटि चुकल छल, मन विक्षिप्त भए गेल छल । हमरा पहिले बेर ज्ञान भेल छल, मनुष्य भनहि जन्मना स्वतंत्र हो तथापि ओ पूर्वज द्वारा निर्धारित कठोर नियमक बंधन सँ मुक्त नहि भए सकैछ । नभ-मंडल जकरा

हमरा लोकनि अपरिवर्त्तनीय बुझैत छी, ओहो समयक चक्रमे अपरिवर्तित नहि रहि पबैछ— ओहो वर्त्तमानक इच्छाक समक्ष भूत आ भविष्यक इच्छाक समक्ष वर्त्तमानक समर्पणक प्रतीक थिक ।

ओहि रातिक बाद अनेक बेर हम ओहि आध्यात्मिक नियमक सम्बन्ध मे, जाहि कारण सलमा जीवनक अपेक्षा मृत्युक चुनाव कएलक, सोचैत रहलहुँ अछि । कतेक बेर हम बलिदानक महत्ता आ विद्रोहक फलस्वरूप संतुष्टिक तुलना करैत रहलहुँ अछि, जे ककरा श्रेयस्कर, ककरा सुन्दर मानी । किन्तु अध्यावधि हमरा एके टा सत्य सँ दर्शन भेल अछि, आ ओ थिक— सत्यनिष्ठा, जे हमरा सभक सकल क्रिया-कलाप केँ सम्माननीय बनबैछ । ओहने सत्यनिष्ठा छलैक सलमा करागी मे ।

दशम अध्याय

विवाहक पाँच वर्षक बादो सलमा केँ सन्तान-सुख प्राप्त नहि भए सकलैक, जाहि सँ ओकर विवाहक बन्धन सुदृढ़ भए सकितैक, जे दूटा मूलत: भिन्न आत्माकेँ अभिन्न बना सकितैक ।

संतानहीन नारी सर्वत्र हीन दृष्टि सँ देखलि जाइछ, कारण अधिक पुरुष संताने द्वारा अपन आस्तित्वकेँ, अनादि काल ले', सुरक्षित राखए चाहैत अछि ।

स्वार्थी पुरुष नि:सन्तान पत्नी केँ अपन शत्रु मानि बैसैत अछि, ओकरा सँ घृणा करए लगैछ आ ओकर परित्याग कए ओकर मृत्युक कामना करए लगैछ । मंसूर बे'गालिब एहने लोक छलाह, ओ पाथर जकाँ कठोर आ चिताक आगि जकाँ लोभी छलाह । संतानक अभिलाषा आ अपन प्रतिष्ठाक लोभ सँ आन्हर भए ओ सलमाक सौंदर्य आ माधुर्य पर्यन्त सँ घृणा करए लागल छलाह ।

गुफाक गर्भ मे उगैत गाछ मे फल-फूल नहि लगैछ, आ सलमा, जकर जीवन अन्धकार केँ समर्पित भए चुकल छलैक, माय नहि बनि सकलि...

बुलबुल अपन नीड़क निर्माण पिजड़ा मे नहि कए सकैछ, कारण ओतए जनमल सब पिहुआ जन्मजात दासताक शिकार भए

जएतैक । सलमा दीनताक बंदिनी बनि गेलि छलि, किन्तु ईश्वरक इच्छा ई नहि छलनि जे एकटा दोसरो आत्मा ओकर सहभागी बनि ओही दुर्भाग्यक शिकार बनए । एहि पृथ्वीक वक्षपर विकसित प्रत्येक फूल प्रकृतिक प्रेम आ सूर्यक स्नेहक संतान थिक, आ तहिना मानव-शिशु मनुष्यक प्रेम आ समर्पणक संयोगक प्रतिफल थिकैक, एहि वृक्षक फूल थिकैक ।

सलमाक रस-बेरूत स्थित सुन्दर निवासमे प्रेम आ अनुरागक कोनो स्थान नहि छलैक, तथापि नित्यप्रति सलमा रातिमे, ईश्वरक समक्ष नतमस्तक भए संतान लेल, जकर उपस्थिति ओकरा मानसिक सुख आ सात्वना प्रदान करितैक, प्रार्थना करैत छलि ।... आ ओ ताधरि अनवरत एहि प्रार्थना मे लागलि रहलि यावत् ईश्वर ओकर प्रार्थना सुनि नहि लेलथिन...

अन्ततः गुफा मे उगल वृक्ष मे फल लागि गेलैक । बुलबुल अपने पाँखि सँ अपन पिजड़ामे नीड़क निर्माण मे लागि गेल ।

बेड़ी मे जकड़ल सलमाक हाथ एक बेर पुनः ईश्वरीय वरदान केँ स्वीकार करबा ले' स्वर्ग दिस पसरि गेलैक । संसार मे ओकरा ले' संतान-सुख सँ पैघ कोनो वरदान नहि छलैक...

ओ पल-पल ओहि दिनक प्रतीक्षा मे काटि रहलि छलि, जाहि दिन ओकर नवजात शिशुक मधुर क्रन्दन ओकर कान मे पड़तैक...

ओकर नोराएल आँखि मे एक उज्ज्वल भविष्यक नवल विहानक प्रतिविम्ब झलकि आएल छलैक...

'निशान'क मास मे सलमा केँ प्रसव-पीड़ा होमए लगलैक । शय्याग्रस्त भेलि ओ जीवन-मृत्युक संग्रामक बीच झुलि रहलि छलि । वैद्य आ परिचारिका एहि भूमि पर नवीन आगतक स्वागत ले' उद्यत बैसल छलाह । मध्य-रात्रिक वेलामे भीषण वेदना मे ओ रहि-रहि

कए कानि उठैत छलि । लगैत छल, ओ क्रन्दन माय सँ सन्तानक बिछुड़नक क्रन्दन हो... महाशून्य मे अस्तित्व-रक्षाक प्रयासक क्रन्दन हो... दुर्बलताक, महाशक्तिक समक्ष क्रन्दन हो... जीवन आ मृत्युक क्रूर चरण मे उदास पड़लि सलमाक क्रन्दन तेहने छल ।

सूर्योदय समकाल मे सलमा पुत्रक जन्म देलक । जखन ओकर आँखि खुजलैक तँ ओकर परिवारक सदस्य सभक मुँह पर प्रसन्नताक लक्षण स्पष्ट छलैक, किन्तु ओकर समक्ष तखनो जीवन-मृत्युक बीच संघर्ष पूर्ववत् चलि रहल छलैक । ओ पुनः आँखि मुनि लेलक । ओकर मुँह सँ अकस्मात् 'पुत्र !' शब्द निकलि पड़लैक । दासी रेशमी परिधानमे लपेटल नवजात शिशु केँ आनि कए मायक एक कात सुता देलकैक । किन्तु, चिकित्सक तखनहुँ सलमाक स्थिति देखि कए निराशा मे अपन गरदनि हिला रहल छलाह ।

आनन्द आ खुशीक हलचलक स्वर सुनि पड़ोसिया सब सेहो उठि-उठि, पिताकेँ पुत्रक जन्मक बधाइ देबए आबि रहल छलाह । किन्तु प्रसूति आ चिलकाक स्थिति देखि चिकित्सक तखनहुँ निराशे छलाह...

नोकर-चाकर दौड़ि कए मंसूर बे' केँ पुत्र-जन्मक शुभ संवाद देबए चाहैत छलनि, किन्तु चिकित्सकक निराश आँखि तखनो माय आ नवजात शिशुए पर छलनि ।

जखन सलमा अपन शिशु केँ उठा कए अपन स्तन सँ लगौने छलि, सूर्योदय भए गेल छलैक । शिशु मायक कोर मे अबिते आँखि खोलि एक बेर माय दिस तकलक, किन्तु सत्वर चौँकि कए सर्वदाक लेल आँखि मुनि लेलक । चिकित्सक मृत शिशुकेँ सलमाक कोर सँ छीनि कए अपना लग लए गेलाह । हुनको गाल पर नोर टघरि आएल छलनि । 'ई तँ जाइत अतिथि अछि ।' -ओ अस्पष्ट स्वर मे स्वगत बजलाह ।

जखन मंसूर दोसर कोठलीमे अपन पड़ोसिया सभक संग,

पुत्र-जन्मक उपलक्ष मे, मदिराक चुस्की लए रहल छलाह, शिशु अपन दम तोड़ि चुकल छल । सलमा चिकित्सक दिस तकैत विनतीक स्वर मे बाजलि– "हमर बच्चा केँ हमरा लग दिअ । हमरा ओकरा अपना हृदय सँ साटि लेबए दिअ ।"

यद्यपि शिशुक मृत्यु भए चुकल छलैक, तैयो मदिरा सँ छलकैत प्यालीक ध्वनि बगलक कोठली मे आओर उँच भए आएल छलैक...

ओ एकटा विचार जकाँ अवतीर्ण भए, क्षीण 'आह' मे बदलि, भगैत छाहरि जकाँ अन्तर्द्धान भए गेल ।

ओ अपन जननी केँ सांत्वना आ संतोष देबा ले' जीवि नहि सकल । रातिक आँखि सँ खसल ओसक बुन्न जकाँ ओ रातिमे आविर्भूत भए, प्रात होइते, सूर्यक स्पर्श सँ वाष्पीभूत भए गेल ।

समुद्रक ज्वारि सँ कछेर पर आनल मोती जकाँ ओ ज्वारिक संगहि पुनः समुद्रक गर्भ मे भासि गेल । जीवनक कोँढ़ी सँ फुलाइत एकटा फूल, जे फुलाइते मृत्युक क्रूर पयरक तरमे मसोढ़ल भए गेल ।

एकटा प्रिय अतिथि, जकर आगमन सलमाक हृदय केँ प्रकाशमान कए देने रहैक, तकरे प्रस्थान ओकर प्राण हरि लेलकैक । तारागण, सूर्य, चन्द्रमा, मनुष्य आ राष्ट्रक जीवन यैह थिकैक ! सलमा पुनः कानि उठलि– "हमर नेना केँ हमरा लग दिअ । हमरा ओकरा हृदय सँ लगाबए दिअ ।''

चिकित्सक माथ झुकौनहि अवरुद्ध कण्ठ सँ बजलाह– "अहाँक शिशु निष्प्राण भए चुकल अछि । धैर्य राखू !" हुनक ई शब्द सुनिते सलमा हठात् चीत्कार कए उठलि, किन्तु सत्वर शान्त भए गेलि । ओकर अधरपर मुस्कानक रेखा आबि गेल छलैक, जेना अकस्मात् ओकरा किछु नव गप्प मोन पड़ि आएल होइक । ओ बाजलि– "हमर बच्चा हमरा लग दिअ । हमरा अपन मृत शिशु केँ भरि आँखि देखि लेबए दिअ ।"

वैद्य निष्प्राण शिशु कें उठा कए सलमाक अंक मे राखि देलथिन । सलमा शिशु कें आलिङ्गन मे बान्हि लेलक, आ दोसर दिस मुँह फेरैत पुनः शिशुक प्रति बाजलि– "हमर सुग्गा, तों हमरा लेबए आएल छें । तों हमरा एहि भँवर सँ दूर किनारक बाट देखबए आएल छें । हम एत्तहि छी, बाउ ! चल हमरा लए चल; चल, हम सब एहि अंधकूप सँ बाहर चली ।"

क्षण भरिक पश्चात् सूर्यक प्रकाश खिड़कीक परदाक बीच सँ आबि मृत्युक आगोश मे पड़ल दू टा शान्त–स्थिर शरीर पर पड़ि रहल छलैक । आँखि मे नोर भरने वैद्य कोठली सँ बाहर आबि गेलाह । जखन ओ मंसूर बे'क कोठलीमे पहुँचलाह तँ जलसा मातम मे परिवर्त्तित भए चुकल छल । किन्तु, मंसूर बे' ने किछु बजलाह आ ने हुनक आँखि सँ नोरक एक बुन्ने निकलि सकलनि । ओ अपन दहिना हाथमे सुरा–पात्र लेने मूर्त्तिवत् ठाढ़ छलाह ।

दोसर दिन, सलमाकें ओकर धवल बियहुती परिधानमे लपेटि कए 'ताबूत' मे राखि देल गेलैक । मृत, नवजात शिशु सेहो अपन जनमौटी वस्त्र मे मायक कोर मे, ओकर छाती सँ सटा कए राखल गेल । दुनू शव कें एके 'ताबूत' मे राखि कए श्मशान धरि आनल गेलैक । लोकक धररोहिक संग हमहुँ श्मशान धरि गेल रही ।

श्मशान पहुँचि कए बुलो गालिब, जखन आन पुरोहित सब प्रार्थना मे संलग्न छल, मंत्र पाठ करैत रहलाह । सभक आकृति पर जेना शून्यता आ अज्ञानताक आवरण पड़ल छलैक !

ताबूत जखन पृथ्वीक गर्भ मे उतारल गेल तँ केओ बाजि उठल– "पहिले बेर हम सब दूटा शवकें एक 'ताबूत' मे देखि रहल छिऐक ।"

"लगैत अछि, जेना ई नेना मायकें, एहि निर्दय स्वामी सँ, उद्धारे करबा लए आएल छल ।'' –दोसर बाजल ।

"नेना कें ने देखियौक, ओ कोना आकाश दिस ताकि रहल अछि ! ओकर आँखि, आँखि नहि, पाथर होइक । लगैत नहि छैक जेना एके दिन मे ओकर पत्नी आ बेटा दुनू मरि गेलैक !" –केओ तेसर बाजल ।

आओर केओ बाजल– "कोन चिन्ता छैक, पित्ती काल्हिए फेर आन कोनो जथगरि आ देहगरि मौगी सँ विवाह करा देथिन ।"

पादरी बुलो गालिब आ पंडा–पुरोहित सब, जाधरि चिताक माटि भरल नहि गेल, मंत्र पढ़िते रहलाह । लोक सब एकाएकी पादरी आ हुनक भातिजकें सांत्वना दए रहल छलनि, किन्तु हम एक कातमे एकसरे ठाढ़ रहलहुँ । हमरा सांत्वना देबा ले' केओ नहि छल । मने सलमा आ ओकर शिशु हमर केओ नहि हो !

लोक सब एकाएकी श्मशान सँ आपस भए गेल । मात्र सारा खुननिहार सब हाथ मे कोदारि लेने ओतए ठाढ़ छल । हम लग जाकए पुछलिऐक– "की अहाँ सब कें स्मरण अछि, फेरिस इफानी करामीक समाधि एतए कोन ठाम छनि ?" ओसब क्षण भरि ले' हमरा दिस देखैत रहल आ पुनः सलमाक चिता कें लक्ष्य कए बाजल– "ठीक, एत्तहि ।'' हम हुनक बेटी कें हुनक छातीए सँ लगा कए राखि देने छिऐनि, आ बेटीक छाती सँ लागल ओकर नेना छैक । आब एहि कोदारि सँ हम माटि खसा दैत छिऐक ।

"एहि खाधि मे अहाँ हमर आत्मा कें सेहो गाड़ि चुकल छी"– हम कहलिऐक ।

सारा खुननिहार सब जखन आँखिक परोक्ष भए चुकल छल, हम अपना कें रोकि नहि सकलहुँ । हम सलमाक सारा पर धराशायी भए खूब कनलहुँ ।

●